



भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

सजल

अंक - चतुर्थ, मार्च 2026
2026

सृजन

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता की चतुर्थ राजभाषा गृह पत्रिका, मार्च 2026

निदेशक

प्रो. आलोक कुमार राय

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (प्रभारी)

श्री विजय सिंह विराट

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन)

श्री अरुणाभ दास

सलाहकार समिति

डॉ. नारायण चंद्र घोष - पुस्तकालयाध्यक्ष एवं अध्यक्ष, समिति
श्री विजय सिंह विराट - वित्त एवं लेखा अधिकारी, सदस्य
श्रीमती श्वेता अग्रवाल - वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, सदस्य
श्री अभिषेक मंडल - प्रशासनिक अधिकारी, कार्यकारी शिक्षा, सदस्य
श्रीमती शुभ्रा धर - प्रबंधक (सामान्य कार्यक्रम), कार्यकारी शिक्षा, सदस्य
श्रीमती सुनीता दुबे - सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव

संपादक

श्रीमती सुनीता दुबे - सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

अस्वीकरण

1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं, ऐसा सुनिश्चित करना सलाहकार समिति के लिए संभव नहीं है।

विशेष सूचना

यह पत्रिका पर्यावरण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के तहत इको-फ्रेंडली (पर्यावरण अनुकूल) कागज़ पर मुद्रित की गई है।



राजभाषा गृह पत्रिका
सृजन
अंक - चतुर्थ, मार्च 2026



भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता- 700104

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	संदेश	संदेश देने वाले अधिकारी	पृष्ठ सं.
1	निदेशक के कलम से	प्रो. आलोक कुमार राय	4
2	संदेश	श्री विजय सिंह विराट	5
3	मेरा अनुभव	डॉ. नारायण चंद्र घोष	6
4	धन्यवाद ज्ञापन	श्री अरुणाभ दास	7
5	संपादकीय	श्रीमती सुनीता दुबे	8
गद्य संकलन			
	रचना	रचनाकार	
6	क्रिकेट: भारत का सबसे प्रिय खेल	श्री अभिषेक मंडल	10
7	जब साँसें थकने लगे, और हौसले बुलंद हो (ब्लड कैसर से सामना – एक खतरनाक व्यक्तिगत अनुभव)	श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव	11
8	जिस दिन अमेरिकी राजदूत हमारे घर आए थे	सुश्री अनिदिता रुद्र	15
9	मेरी सबसे प्रिय यात्रा: माँ वैष्णो देवी के पावन धाम तक	श्रीमती जया सिंह	16
10	पर्वत: मौन में बोलती जीवन की साधना	सुश्री प्रियंका चटर्जी	17
11	तिरुपति बालाजी दर्शन: मेरा 2025 का अनुभव	श्रीमती प्रियंका दासगुप्ता	18
12	धीरता ही स्थिरता है	श्रीमती पायल मजुमदार	20
13	जागेश्वर धाम	श्रीमती मानसी सान्याल	21
14	उपहार	श्रीमती मैत्रेयी बनर्जी	23
15	प्राचीन भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी	श्री महेश पटनायक	25
16	जलवायु परिवर्तन और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विचारों की प्रासंगिकता	श्रीमती रोमा बनर्जी	27
17	भारतीय युवाओं की आत्म-खोज	सुश्री सपना कुमारी	28
18	सोलमेट: वह जो स्मृतियों में नहीं, अस्तित्व में बस जाता है	श्रीमती सुनीता दुबे	29
19	नारी का स्वरूप	श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव	30
20	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उदय: निहितार्थ और अनुप्रयोग	सुश्री तपश्री रॉय	31
पद्य संकलन			
	रचना	रचनाकार	
21	सर्दी का मौसम	श्री अरिंदम रॉय	34

क्र. सं.	संदेश	संदेश देने वाले अधिकारी	पृष्ठ सं.
34	पितृत्व	श्री मुथुसुब्रमण्यम एस. एस.	34
23	बच्चें	श्री अरुणाभ दास	35
24	माँ	श्री किशोर राय	36
25	भारतीय सेना	श्री ब्रज कानाई मिद्या	37
26	सफ़र-ए-ज़िंदगी	श्री चिरंजीब चटर्जी	38
28	दौड़	श्रीमती जया सिंह	38
29	एक फ़ौजी की खामोश श्रद्धांजलि	स्क्राइन लीडर जुल्फ़कार हसन (सेवानिवृत्त)	39
30	यह दिल भी...	श्रीमती डॉली सेन	40
31	उम्मीद	श्रीमती पियाली चक्रबर्ती	40
32	मैं नारी हूँ	श्रीमती प्रदीप्ता रॉय	41
33	खूबसूरत मेरा गाँव	श्री बैद्यनाथ चक्रबर्ती	41
35	पतंगबाज़ी: बचपन की यादें	श्री विशाल लाल राउत	42
36	प्रत्याशा	श्री सुदीप्त मजुमदार	43
37	ईश्वर की महिमा	श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव	43
38	सिक्का	श्रीमती शेरोन क़मर	44
39	खुद में रहो मस्त	श्रीमती शुभ्रा धर	44
40	समाज के ठेकेदार	श्रीमती श्रीपर्णा दास	45
कार्यालयीन गतिविधियां			
41	राजभाषा पखवाड़ा 2025 के प्रतियोगिताओं के परिणाम		46
42	राजभाषा प्रतियोगिता: वर्ष 2025-26 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम		47
43	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कोलकाता (कार्यालय-2) के तत्वावधान में वर्ष 2025-26 के आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के परिणाम		48
44	राजभाषा पखवाड़ा 2025 के दौरान आयोजित समापन समारोह एवं राजभाषा गृह पत्रिका "सृजन" के तृतीय अंक का लोकार्पण		49



निदेशक के कलम से

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होता है, वह किसी संस्थान की चेतना, संस्कार और दिशा को भी प्रतिबिंबित करता है। भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता में ज्ञान, नेतृत्व और मूल्यपरक सोच के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के संवर्धन को भी हम एक महत्वपूर्ण दायित्व के रूप में स्वीकार करते हैं। इसी दृष्टि से 'सृजन' पत्रिका का यह नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे विशेष प्रसन्नता हो रही है।

'सृजन' केवल एक साहित्यिक संकलन नहीं है, बल्कि यह हमारे संस्थान की उस आंतरिक ऊर्जा का सजीव प्रमाण है, जहाँ विचार, अनुभव और संवेदनाएँ हिंदी के माध्यम से आकार ग्रहण करती हैं। यह मंच संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों, शिक्षकों और हिंदी प्रेमियों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति सांझा करने का अवसर प्रदान करता है तथा कार्य और संस्कृति के बीच एक सशक्त सेतु का निर्माण करता है।

आज के वैश्विक और बहुभाषी परिवेश में हिंदी की भूमिका और भी व्यापक हो गई है। यह न केवल हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव का माध्यम है, बल्कि समावेशी संवाद और सहज अभिव्यक्ति की शक्ति भी रखती है। 'सृजन' के माध्यम से हम यह संदेश देना चाहते हैं कि हिंदी आधुनिक विचारों, अकादमिक विमर्श और प्रशासनिक संवाद में समान रूप से सक्षम और प्रभावी है।

इस अंक में संकलित रचनाएँ संस्थान की बौद्धिक विविधता, सामाजिक संवेदनशीलता और मानवीय दृष्टिकोण को रेखांकित करती हैं। इन रचनाओं में निहित कठिन परिश्रम, प्रतिबद्धता और सृजनात्मक साहस अत्यंत प्रशंसनीय हैं। मैं इस प्रयास से जुड़े सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

आइए, हम सब मिलकर हिंदी को केवल एक दायित्व के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत कार्य-संस्कृति के रूप में अपनाएँ। 'सृजन' इसी निरंतर यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है—जो भाषा के माध्यम से विचारों को, और विचारों के माध्यम से संस्थान को समृद्ध करता है।

जय हिंदी। जय सृजन।

शुभेच्छाओं सहित,

(प्रो. आलोक कुमार राय)

निदेशक

भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता



संदेश

भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता की राजभाषा पत्रिका 'सृजन' का नवीन वार्षिक अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका संस्थान की शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं रचनात्मक चेतना का सजीव प्रतिबिंब है, जो राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी सतत प्रतिबद्धता को सुदृढ़ रूप से अभिव्यक्त करती है।

'सृजन' वर्षों से एक ऐसे सशक्त मंच के रूप में विकसित हुई है, जिसने संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया है। यह पत्रिका न केवल रचनात्मक विचारों का संकलन है, बल्कि हिंदी भाषा के माध्यम से विचार, संवेदना और अनुभवों को साझा करने की एक सार्थक पहल भी है।

हिंदी हमारी सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय चेतना की संवाहक भाषा है। यह विविधता से परिपूर्ण हमारे समाज को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। संस्थान द्वारा हिंदी के प्रयोग और प्रोत्साहन हेतु किए जा रहे प्रयासों में 'सृजन' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो रचनात्मकता और भाषा-संवर्धन के बीच सेतु का कार्य कर रही है।

इस वर्ष के अंक में साहित्य की विभिन्न विधाओं—कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत एवं समसामयिक विषयों पर आधारित लेखों—के माध्यम से न केवल सृजनात्मक अभिव्यक्ति को विस्तार मिला है, बल्कि समकालीन सामाजिक एवं बौद्धिक सरोकारों को भी प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया है। यह अंक संस्थान में हिंदी के प्रति बढ़ती जागरूकता, रुचि और सहभागिता का प्रमाण है।

मैं इस अवसर पर राजभाषा प्रकोष्ठ, संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों के प्रयासों की सराहना करता हूँ, जिनके समर्पण और परिश्रम से यह अंक साकार हो सका है। आप सभी का सहयोग ही इस प्रकार की रचनात्मक पहलों को निरंतर आगे बढ़ाने की प्रेरणा देता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'सृजन' का यह नवीन अंक पाठकों को न केवल साहित्यिक आनंद प्रदान करेगा, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति उनके जुड़ाव और सम्मान को और अधिक सुदृढ़ करेगा।

विजय सिंह विराट

(विजय सिंह विराट)

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (प्रभारी)

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता



मेरा अनुभव.....

भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता की राजभाषा गृह पत्रिका 'सृजन' के चतुर्थ अंक के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं संतोष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका न केवल साहित्यिक रचनाओं का संकलन है, बल्कि संस्थान की बौद्धिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों और हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता की सशक्त अभिव्यक्ति भी है।

हिंदी भाषा हमारी ज्ञान-परंपरा और सांस्कृतिक विरासत की संवाहक है। एक पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में मेरा यह अनुभव रहा है कि भाषा और पुस्तकालय एक-दूसरे के पूरक हैं—जहाँ पुस्तकें विचारों को संरक्षित करती हैं, वहीं भाषा उन्हें जीवंत बनाती है। 'सृजन' इसी जीवंतता का उदाहरण है, जो संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं हिंदी प्रेमियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को एक साझा मंच प्रदान करती है।

इस वर्ष के अंक में सम्मिलित कविताएँ, कहानियाँ, आलेख, संस्मरण एवं अन्य रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध हैं, बल्कि समकालीन समाज, मानवीय संवेदनाओं और बौद्धिक विमर्श को भी सार्थक रूप से अभिव्यक्त करती हैं। ये रचनाएँ पाठकों को आत्मचिंतन एवं विचार-विस्तार के लिए प्रेरित करेंगी।

मैं इस अवसर पर राजभाषा अनुभाग, संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों के प्रयासों की सराहना करता हूँ। उनके सतत परिश्रम, समर्पण और रचनात्मक दृष्टि के बिना 'सृजन' का यह अंक संभव नहीं हो पाता। साथ ही, उन सभी सहयोगियों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस प्रकाशन में योगदान दिया है।

इस अंक के माध्यम से 'सृजन' पाठकों को केवल साहित्य पढ़ने का अवसर नहीं देता, बल्कि उन्हें अपने अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों से जुड़ने का आमंत्रण भी देता है। यह पत्रिका हमें याद दिलाती है कि व्यस्त शैक्षणिक और प्रशासनिक दायित्वों के बीच भी रचनात्मकता जीवित रहती है और हमें मानवीय बनाए रखती है। मुझे विश्वास है कि यह अंक पाठकों के साथ एक आत्मीय संवाद स्थापित करेगा और संस्थान में हिंदी के प्रति रुचि, सहभागिता तथा सृजनशील सोच को नई दिशा प्रदान करेगा।

धन्यवाद एवं शुभकामनाओं सहित,

पुनः श्री. घोष

(डॉ नारायण चन्द्र घोष)

सलाहकार समिति के अध्यक्ष एवं पुस्तकालयाध्यक्ष

बी.सी. रॉय स्मारक पुस्तकालय

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता



धन्यवाद जापन

भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता की राजभाषा विभागीय पत्रिका 'सृजन' का यह चतुर्थ अंक संस्थान के सामूहिक प्रयासों का साकार परिणाम है। यह पत्रिका यह दर्शाती है कि ज्ञान, प्रशासन और मानवीय संवेदनाएँ जब भाषा के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ती हैं, तब कार्यस्थल एक जीवंत और सृजनशील वातावरण में रूपांतरित हो जाता है।

मानव संसाधन के क्षेत्र से जुड़े होने के नाते मेरा यह अनुभव रहा है कि भाषा किसी भी संगठन की कार्यसंस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 'सृजन' उसी भूमिका को सुदृढ़ करता है। यह न केवल हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करता है, बल्कि कर्मचारियों और अधिकारियों के भीतर छिपी रचनात्मक अभिव्यक्ति को सामने लाने का अवसर भी प्रदान करता है।

इस अंक में संकलित विविध विधाओं की रचनाएँ संस्थान की बहुलतावादी सोच और रचनात्मक ऊर्जा का परिचय देती हैं। यहाँ प्रस्तुत लेखन यह सिद्ध करता है कि साहित्य केवल अवकाश का विषय नहीं, बल्कि कार्यजीवन में संतुलन, संवेदना और संवाद को बनाए रखने का प्रभावी माध्यम भी है।

मैं राजभाषा प्रकोष्ठ एवं संपादक मंडल के प्रयासों की सराहना करता हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका को एक सुव्यवस्थित और सार्थक स्वरूप प्रदान किया है। सभी रचनाकारों के प्रति भी मेरा आभार है, जिनकी सहभागिता के बिना यह अंक संभव नहीं हो पाता। इसके अतिरिक्त, संस्थान के नेतृत्व द्वारा इस पहल को निरंतर समर्थन प्रदान किया जाना भी उल्लेखनीय है।

यह आशा की जाती है कि 'सृजन' का यह अंक संस्थान के सदस्यों को पढ़ने, सोचने और संवाद करने के लिए प्रेरित करेगा तथा हिंदी भाषा को कार्यस्थल के दैनिक जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

सादर धन्यवाद सहित,

अरुणाभ दास

(अरुणाभ दास)

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन)

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता



संपादकीय

प्रिय पाठकों,

भारतीय प्रबंध संस्थान, कलकत्ता की राजभाषा विभागीय पत्रिका 'सृजन' का चतुर्थ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं संतोष हो रहा है। यह अंक न केवल इस पत्रिका की निरंतरता का प्रतीक है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि संस्थान में हिंदी भाषा के प्रति रुचि, सहभागिता और रचनात्मक चेतना निरंतर सुदृढ़ हो रही है।

'सृजन' समय के साथ एक ऐसा मंच बन चुका है, जहाँ संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की विविध साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ सहज रूप से प्रस्तुत होती हैं। यह पत्रिका केवल प्रशासनिक संचार का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों, अनुभवों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का भी सशक्त माध्यम है, जो हिंदी भाषा को संस्थान की कार्यसंस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाता है।

इस चतुर्थ अंक में कविता, लघुकथा, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत एवं विचारपरक लेखों जैसी विविध साहित्यिक विधाएँ शामिल हैं। ये रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध हैं, बल्कि समकालीन जीवन, सामाजिक अनुभवों और मानवीय संवेदनाओं को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती हैं।

इस अवसर पर मैं संस्थान के निदेशक प्रो. आलोक कुमार राय, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (प्रभारी) श्री विजय सिंह विराट, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. नारायण चन्द्र घोष, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन) श्री अरुणाभ दास, तथा राजभाषा समिति के अन्य सदस्य के प्रति विशेष आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके मार्गदर्शन, सहयोग और निरंतर प्रोत्साहन के बिना इस अंक का प्रकाशन संभव नहीं हो पाता। साथ ही, संपादकीय टीम, रचनाकारों और सभी सहयोगियों के योगदान के लिए भी मैं हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

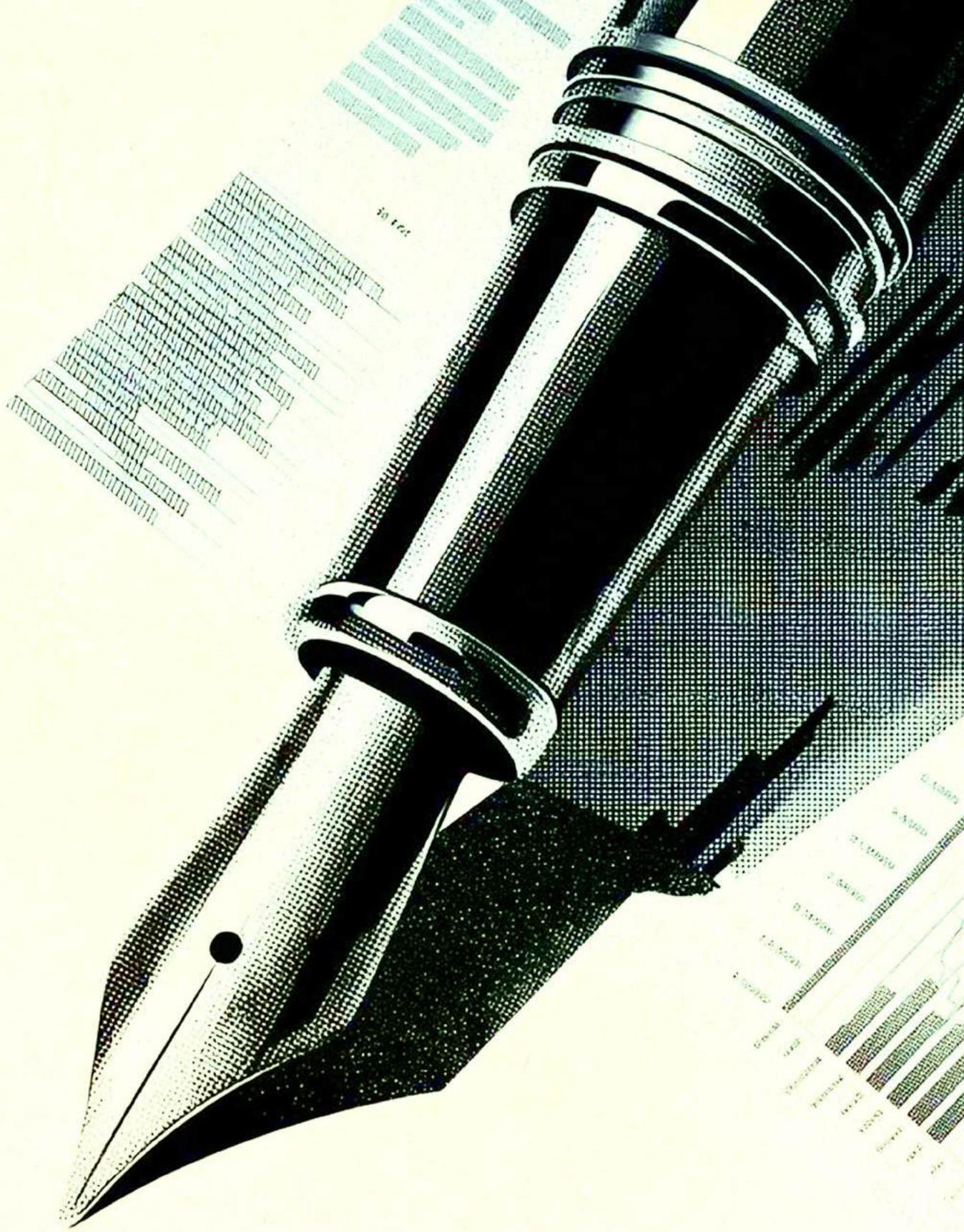
मुझे विश्वास है कि 'सृजन' का यह चतुर्थ अंक पाठकों को न केवल साहित्यिक आनंद देगा, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति उनकी अभिरुचि और जुड़ाव को और अधिक प्रगाढ़ बनाएगा। यह पत्रिका संस्थान में रचनात्मकता, सांस्कृतिक चेतना और भाषाई समृद्धि के उत्सव का भी एक सशक्त माध्यम बनी रहे—इसी कामना के साथ।

शुभकामनाओं सहित,

सुनीता दुबे

(सुनीता दुबे)

सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता



गद्य संकलन



अभिषेक मंडल

क्रिकेट: भारत का सबसे प्रिय खेल



क्रिकेट भारत में केवल एक खेल नहीं, बल्कि एक ऐसा भावनात्मक माध्यम है जो पूरे देश को एक सूत्र में बाँधता है। महानगरों की चहल-पहल से लेकर दूर-दराज़ के गाँवों तक, बल्ले और गेंद की टकराहट की आवाज़ लाखों लोगों के सपनों की गूँज बन जाती है। औपनिवेशिक काल में भारत में प्रवेश करने वाला यह खेल समय के साथ राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बन गया, विशेषकर अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की ऐतिहासिक उपलब्धियों के बाद। 1983 और 2011 के विश्व कप विजय जैसे क्षणों ने क्रिकेट को एक एकीकृत शक्ति में परिवर्तित कर दिया, जिससे भारतीयों में आत्मविश्वास और सामूहिक आनंद का संचार हुआ।

भारत में क्रिकेट के प्रति प्रेम महान खिलाड़ियों की प्रेरणादायक यात्राओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। सुनील गावस्कर और कपिल देव जैसे दिग्गजों ने विश्वास की नींव रखी, वहीं सचिन तेंदुलकर समर्पण, विनम्रता और उत्कृष्टता के प्रतीक बने। एम.एस. धोनी ने दबाव में शांत और सशक्त नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया, जबकि विराट कोहली ने फिटनेस, आक्रामकता और पेशेवर संस्कृति को प्रेरित किया। इन खिलाड़ियों की संघर्षपूर्ण कहानियाँ युवाओं को न

केवल खेल में, बल्कि जीवन में भी बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित करती हैं।

क्रिकेट की लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण इसकी सरलता और मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र है। गली क्रिकेट से लेकर विश्वस्तरीय स्टेडियमों तक, यह खेल सभी का है। इंडियन प्रीमियर लीग जैसे मंचों ने युवा प्रतिभाओं को अवसर और वैश्विक पहचान प्रदान कर क्रिकेट को और अधिक लोकप्रिय बनाया है।

आगे का मार्ग जमीनी स्तर पर कोचिंग को सुदृढ़ करने, महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने और ग्रामीण व अर्ध-शहरी भारत में खेल अवसंरचना में निवेश करने में निहित है। प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ खेल भावना और शिक्षा को प्रोत्साहित करना जिम्मेदार खिलाड़ियों के निर्माण में सहायक होगा।

अंततः, क्रिकेट भारत की आत्मा का प्रतिबिंब है—विविध होते हुए भी एकजुट, उत्साही होते हुए भी अनुशासित। अपने महान खिलाड़ियों से प्रेरणा और युवा ऊर्जा से संचालित भारतीय क्रिकेट आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा और देश का सबसे प्रिय खेल बना रहेगा।





जब साँसें थकने लगें, और हौसले बुलंद हो

(ब्लड कैंसर से सामना – एक छतरनाक व्यक्तिगत अनुभव)



अनिल कुमार श्रीवास्तव

मई 2025 के आखिरी दिनों में मैंने अपने स्वास्थ्य में एक अजीब-सी गिरावट महसूस करनी शुरू की। पहले जो काम बिना थकान के हो जाते थे, वे अब चुनौती लगने लगे थे। मात्र 5 - 7 सीढ़ियाँ चढ़ने पर ही साँस फूलने लगती, थोड़ी दूरी चलने पर भी शरीर जवाब देने लगता। यह वही शरीर था जो कुछ समय पहले तक आई आई एम कलकत्ता के विशाल परिसर में छात्रावास प्रबंधन, अनुरक्षण तथा एस्टेट प्रबंधन की जिम्मेदारियों के तहत प्रतिदिन कैम्पस में लंबी दूरी तय करता था—और वह भी बिना किसी शारीरिक कष्ट के।

शुरुआत में इसे सामान्य थकान या उम्र का असर मानकर नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की गई। लेकिन जब स्थिति में सुधार नहीं हुआ, तो चिकित्सकीय परामर्श और आवश्यक मेडिकल जाँच करवाई गई। जाँच के परिणामों ने मेरे और मेरे परिवार के सामने एक ऐसी सच्चाई रख दी, जिसे स्वीकार करना आसान नहीं था—मुझे ब्लड कैंसर था। इस निदान को स्वीकार कर पाना मेरे लिए ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार के लिए मानसिक रूप से अत्यंत कठिन था। सबसे बड़ा प्रश्न यही था—“क्यों?” मैं न तो धूम्रपान करता था, न शराब का सेवन करता था, न ही किसी प्रकार के नशे या व्यसन का आदी था। फिर भी यह बीमारी मेरे जीवन में आ खड़ी हुई थी। शायद यहीं से यह सीख मिलती है कि बीमारी कारण नहीं देखती, वह बस आ जाती है।

पूरी तरह आश्वस्त होने के लिए दो अलग-अलग स्थानों पर बोन मैरो टेस्ट करवाए गए। दोनों रिपोर्ट्स ने एक ही सत्य की पुष्टि की—मैं वास्तव में ब्लड कैंसर से ग्रस्त था। अब मेरे सामने दो ही रास्ते थे— डर के आगे झुक जाना या साहस के साथ इलाज की राह चुनना। मेरा पूरा परिवार सकते में था। जिसे जैसा लगा वह अपने-अपने तरफ से मुझे एवं मेरे परिवार को भरोसा दिलाने के लिए मंदिरों में पूजा- अर्चना तथा इतने बड़े खर्च में योगदान देने के लिए अपने-अपने सामर्थ्यानुसार कोशिशें करने लगा, क्योंकि अस्पताल की तरफ से 35 लाख का अनुमानित खर्च

बताया गया था, बशर्ते अगर किसी नए प्रकार की समस्या या साइड इफेक्ट नहीं हुआ तो, वरना खर्च और अस्पताल की अवधि बढ़ती रहेगी। परिवार ने दृढ़ निश्चय किया कि मेरा उपचार टाटा मेडिकल सेंटर, न्यूटाउन, कोलकाता में, डॉ. अरिजित नाग के मार्गदर्शन में होगा जिन्हें इसमें महारत हासिल है। यह निर्णय आसान नहीं था, लेकिन भरोसे, विशेषज्ञता और सकारात्मक सोच ने इसे संभव बनाया। इलाज की प्रक्रिया लंबी थी—शारीरिक रूप से कष्टदायक और मानसिक रूप से चुनौतीपूर्ण। कई बार आगे की सोच कर शरीर कमजोर पड़ता, मन टूटने लगता, लेकिन हर बार परिवार का साथ, अस्पताल और डॉक्टर पर भरोसा तथा भीतर से उठती जीने की इच्छा मुझे फिर से खड़ा कर देती।

मेरी छोटी बहन आई एल एस हॉस्पिटल सॉल्टलेक में डॉक्टर है, उसपर इस उपचार प्रक्रिया के बारे में संभावित प्लानिंग, निर्णय लेने तथा उसे सुचारू रूप से आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी थी। मेरा ब्लड ग्रुप ओ नेगेटिव था जो कि बहुत ही दुर्लभ माना जाता है और उसकी कमी हमेशा रहती है। डॉक्टरों ने कम से कम पांच यूनिट ओ-नेगेटिव ब्लड तथा 7 यूनिट प्लेटलेट का अनुमान दिया था। 5 -6 यूनिट ओ-नेगेटिव ब्लड ग्रुप की व्यवस्था करना भी अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती एवं चिंता का विषय था। मेरे परिवार में मात्र दो सदस्य हैं जिनका ब्लड ग्रुप ओ- नेगेटिव है। अस्पताल की तरफ से निर्देश था कि किसी दूसरे ब्लड बैंक से रक्त की व्यवस्था स्वीकार नहीं की जाएगी। रक्तदाता को अस्पताल में आकर रक्त परीक्षण कराकर रक्तदान करना होगा, साथ ही जो व्यक्ति प्लेटलेट दान करेगा उसे आवश्यकता से दो दिन पूर्व खून की जांच करवा कर फिट पाए जाने पर प्लेटलेट दान करना होगा क्योंकि प्लेटलेट का जीवनकाल मात्र 4 से 5 दिन होता है जिसे ज्यादा दिन सुरक्षित नहीं रखा जा सकता।

इस तहत मेरा पहला हॉस्पिटलाइजेशन 20 जुलाई से 27 जुलाई 2025 तक रहा जिसमें लो-डोज कीमोथेरेपी चला, जिससे मेरे शरीर पर कोई विशेष

प्रभाव नहीं दिखा। क्योंकि मैंने सुना था कि कीमोथेरेपी और रेडिएशन से शरीर एक तरह से जलकर काला हो जाता है। मैं खुश हो रहा था कि चलो फिलहाल मैं बच गया। फिर जुलाई से लेकर नवंबर 2025 तक ओरल-कीमोथेरेपी और विभिन्न मेडिकेशन चला रहा। बीच-बीच में ब्लड टेस्ट होता रहा यह सुनिश्चित करने के लिए कि इस दौरान कैंसर सेल में फिर से कोई वृद्धि हो रहा है कि नहीं। और इसी दौरान बोन मैरो एच एल ए टाइप मैचिंग के लिए मेरी चार बहनों का बोन मैरो एच एल ए टाइप मैचिंग टेस्ट कराया गया, जिसमें मेरी छोटी बहन का 50% मैच पाया गया। डॉक्टर ने मेरी छोटी बहन को डोनर के रूप में स्वीकार किया और आगे की तैयारी शुरू की। तत्पश्चात सभी विभाग के स्पेशलिस्ट से काउंसिलिंग हुआ और सबने मुझे ट्रांसप्लांटेशन के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ बताया। अंतिम निर्णय लेना था-टाटा मेडिकल सेंटर के मेडिकल बोर्ड द्वारा। मेडिकल बोर्ड में उपस्थित चिकित्सकों की टीम ने यह सलाह दिया कि चूंकि मेरी छोटी बहन की उम्र 50 वर्ष से ऊपर है तो क्यों ना मेरी बड़ी बेटी अनुष्का जो 19 वर्ष की है उसका बोन- मैरो एच एल ए टाइप मैचिंग टेस्ट करवा लिया जाए। अगर उसका मैच कर जाता है तो कम उम्र होने की वजह से वह मेरे भविष्य के शारीरिक अवस्था के लिए ज्यादा उपयुक्त रहेगा। अब इस परिस्थिति में मेरी बेटी जो वी आई टी, अमरावती, आंध्र प्रदेश में बी-टेक द्वितीय वर्ष की छात्रा है उसे तीन दिन के लिए आनन-फानन में बुलाया गया, कई तरह के मेडिकल टेस्ट हुए और यह पाया गया उसका भी मेरे साथ 50% मैच है। अब तय हुआ कि मेरी बेटी को ही बोन मैरो डोनर के रूप में स्वीकार कर हेप्लो - आईडेंटिकल जिसे हाफ-मैच एलोजेनिक बोन मैरो या स्टेम सेल ट्रांसप्लांट भी कहा जाता है, किया जाए। चूंकि मेरी बेटी का सेमेस्टर एग्जाम 03 दिसम्बर 25 को समाप्त था, कार्यक्रम उसी अनुसार तय हुआ, 04 दिसम्बर को हवाई जहाज से आई और 05 दिसम्बर 2025 को हम दोनों अस्पताल में भर्ती हो गए और इस उपचार का दूसरा पड़ाव आरम्भ हुआ।

आजकल सामान्यतः बोन मैरो या स्टेम सेल निकालने के लिए दो पद्धतियां हैं जिनमें से एक है कमर की पेल्विक बोन में लगभग 3 इंच लंबी सूई घुसा कर मैरो या स्टेम सेल और बायोप्सी लिया जाता है और दूसरा है डोनर को 6 दिनों तक इंजेक्शन दे कर उसके स्टेम सेल को रक्त शिराओं में एकत्रित किया जाता है एवं एफेरेसिस प्रक्रिया के द्वारा स्टेम सेल या अस्थि मज्जा निकाला जाता है। एफेरेसिस एक चिकित्सीय प्रक्रिया है, जिसमें रक्त के केवल एक विशेष घटक (जैसे प्लेटलेट्स, प्लाज्मा या स्टेम सेल) को अलग किया जाता है और शेष रक्त शरीर में वापस लौटा दिया जाता है। इस परिस्थिति में एक और समस्या उत्पन्न हुई की मेरी छोटी बेटी जो 11 साल की

है जिसका अभी स्कूल चल रहा है, परीक्षाएं होनी है, वह कैसे मैनेज किया जाएगा। तय हुआ कि मेरी चेन्नई स्थित मझली बहन जो फिटजी ग्लोबल स्कूल चेन्नई में हिंदी की अध्यापिका है, उसे कुछ दिनों के लिए बुलाया जाए जो बेटी को संभाल लेगी।

इस दौरान डॉक्टर की तरफ से यह बाध्यता मूलक था कि भर्ती की अवधि में परिवार का कोई सदस्य जिसका कोविड टेस्ट नेगेटिव हो, साथ में परिचारक के रूप में रहना होगा एवं उसे अस्पताल के कमरे से बिल्कुल बाहर नहीं आना है, यानि एक तरह से उसे भी कैद रहना होगा। पहले 6 दिन तो मेरी बेटी परिचारिका के रूप में रह गई। अस्पताल के एक ही कमरे में कैद रहना मेरे लिए तो चिकित्सकीयान मजबूरी थी पर मेरी बेटी के लिए पिता के प्रति कर्तव्य था जिसे निभाने के लिए उसे करना ही था। अगला 6 दिन काटना था, समय व्यतीत करने के लिए कमरे में मात्र टेलीविजन और साथ में मोबाइल एक सहारा था। मोबाइल में नेटफ्लिक्स का सब्सक्रिप्शन लेकर न जाने कैसे-कैसे 6 दिन उसने गुजारा। इधर-उधर की कहानी सुना कर मुझे व्यस्त रखना चाहती थी। 11 दिसम्बर 2025 को स्टेम सेल दे कर वह घर चली गई और उसके बाद मेरी पत्नी परिचारिका के रूप में भर्ती हुई। सबसे पहले मेरी दाहिनी गर्दन की तरफ छोटा सा काट कर हिकमैन-लाइन बनाया गया, जिसके द्वारा सभी प्रकार के इंटरवेनस दवाइयां दी जाने थी तथा जरूरत पड़ने पर संतुलित आहार भी दिया जाता है। जिसमें ग्लूकोज़ (ऊर्जा), अमीनो एसिड (प्रोटीन), फैट इमल्शन, विटामिन, मिनरल्स, इलेक्ट्रोलाइट्सजिन इत्यादि मिला होता है। यह लाइन अगले 6 महीने तक यूं ही मेरी छाती पर लटकता रहेगा। जिन 6 दिनों में मेरी बेटी को इंजेक्शन दिया गया, उसी दौरान मुझे हाई डोज कीमोथेरेपी दिया जाता रहा। जिसे भी मैं आसानी से हजम कर गया। शरीर में मामूली सी हलचल होती थी जिसे मैं झेल सका।

11 दिसंबर 2025 को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया पूरी हुई, बेटी से निकला गया बोन मैरो मुझमें प्रत्यारोपित कर दिया गया। अब बारी थी इससे होने वाले साइड इफेक्ट की, जो अलग-अलग पेशेंट के शारीरिक संरचना, शरीर के इम्युनिटी पावर तथा मानसिक स्थिति के हिसाब से सबमें होता है। उसमें मुख्यतः डायरिया, उल्टी, भयंकर सर दर्द, मांसपेशियों में दर्द, मांसपेशियों का जकड़न, बुखार, सांस की कमी, उच्च रक्त चाप इत्यादि शामिल है, जिसे हमें पहले ही बता दिया गया था। अतः मैं मानसिक रूप से तैयार था। ट्रांसप्लांट होने के दूसरे ही दिन रात को एम एम एफ नामक इंजेक्शन चलने लगा। जो कि शरीर के इम्यून सिस्टम को बढ़ा कर रखने के लिए दिया जाता है ताकि

ट्रांसप्लांटेट मैरो को रिजेक्ट न करे। रात 1:30 बजे ऐसा लगा जैसे मेरी सांसे टूट रही है, मैं सांस नहीं ले पा रहा हूँ और बुरी तरह से अपने आप को असहाय पाया। मन में ऐसा मन में विचार आ गया कि यह शायद मेरी आखिरी रात है, मन ही मन अपने परिवार को, अपने भगवान को याद करता रहा, लगा कि सबसे अलविदा लेने का वक्त आ गया परंतु उपस्थित नर्सिंग स्टाफ एवं डॉक्टर के द्वारा तुरंत हाई डोज ऑक्सीजन दिए जाने पर लगभग एक घंटे की मूर्छा के बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं शायद अभी भी जिंदा हूँ। उसके बाद उपचार के दौरान विभिन्न प्रकार के इंजेक्शंस, स्टेरॉयड और पता नहीं क्या-क्या मेरे शरीर में इंटरवेनस पद्धति के द्वारा डाला जाता रहा। कोई भी ऐसा दिन या रात नहीं रहा जिसमें मैं दर्द मुक्त रहा हूँ। कभी ऐसा लगा कि सिर से लेकर पांव तक मेरे अंदर उच्च गर्म ताप का प्रवाह चल रहा है, तो कभी ऐसा लगा मेरा पूरा शरीर धीरे-धीरे सुन्न होता जा रहा है, कभी ऐसा महसूस हुआ कि मेरा पूरा शरीर कंपकपा रहा है और मैं दूसरी दुनिया की तरफ प्रस्थान कर रहा हूँ। साथ में डायरिया जैसा प्रभाव, खाना देखते ही उल्टी का एहसास, जबरदस्ती खाने की कोशिश करते ही उल्टी हो जाना, फेफड़ों में, हाथ, पैर और पीठ में पानी का भर जाना, सांस की कमी, ऑक्सीजन सपोर्ट इत्यादि चलता रहा। कई दिनों तक रात और दिन में चार घंटे के अंतराल पर बाई पॉप मास्क द्वारा फोर्सड ऑक्सीजन देकर फेफड़े से पानी निकाला गया। हाथ, पैर, पीठ से पानी निकालने के लिए कई दिनों तक इंजेक्शन लगातार चलता रहा। 10 दिन बाद शरीर लगभग टूट चुका था, बिस्तर से उतरना मना हो गया क्योंकि खून के सारे तत्व डब्ल्यू.बी.सी., प्लेटलेट, हीमोग्लोबिन, इम्युनिटी पावर इत्यादि लगभग शून्य स्तर पर हो चुका था और संक्रमणकाल आरंभ हो चुका था। हर सुबह में ईश्वर को धन्यवाद देता कि मैं आज भी, अभी तक जिंदा हूँ।

हर सुबह 5 से 6 ट्यूब खून मेरे शरीर से निकाला जाता और टेस्ट के लिए लैब भेजा जाता 2 घंटे में रिपोर्ट आ जाता। मन में उत्सुकता बनी रहती है कि आज का प्लेटलेट काउंट, डब्ल्यू बीसी, हीमोग्लोबिन कितना है। परंतु लगभग रोज ही डब्ल्यू बी सी 0, हीमोग्लोबिन 7 से नीचे तथा अन्य घटक सामान्य से बहुत नीचे पाया जाता। बाद में पता लगा कि एंग्राफ्रंटमेंट यानि नए सेल बनने की प्रक्रिया ट्रांसप्लांट के लगभग 12 वें दिन से शुरू हो जाती है और 30 वें दिन तक धीरे-धीरे खून के घटक में वृद्धि होती रहती है और जैसे-जैसे वृद्धि होती है शरीर में सुधार इस प्रकार से होते रहता है। इस दौरान यह सारे घटक उतार-चढ़ाव के साथ कम-ज्यादा होते रहते हैं। अतः इंतजार करने के अलावा कोई उपाय नहीं था। मैंने महसूस किया कि इस दौरान मैंने किसी भी रात शायद सोया नहीं था, नींद की दवा का कोई असर नहीं था, रातें

जाग कर ही काटनी पड़ती थी, कभी लगा ही नहीं कि मैं सोया हूँ। इस दौरान मेरी पत्नी की मुख्य भूमिका रही जिन्होंने दिन रात अपनी भूख, प्यास, नींद, थकावट और मानसिक वेदना को सहते हुए मेरा पल-पल ध्यान रखा और यह सुनिश्चित किया की मुझे अस्पताल से स्वस्थ वापस ले जाने के संकल्प को कोई बड़ा झटका ना मिले। मैंने अपने चेहरे और शरीर की रंगत को धीरे-धीरे बदलते हुए देखा और पाया कि मैं अफ्रीकन काया में बदल चुका हूँ, जिसे अचानक से शीशे में देखकर सोचता कि यह क्या हो गया। बाल झड़ चुके हैं, वजन 78 किलो से घट कर 65 किलो हो चुका है। आखिर में 38 दिनों के बाद मुझे अस्पताल से छुट्टी की सूचना दी गई। मन प्रसन्न था, हमारे दृढ़ हौसले एवं परिवार के साथ ने रंग लाया। किसी भी प्रकार के संक्रमण से बचने के लिए 6 महीने के संपूर्ण एकांतवास, व्यक्तिगत एवं दैनिक स्वच्छता इत्यादि ढेरों निर्देश के साथ अस्पताल से छुट्टी मिली। आगामी 6 से 12 महीने तक का साप्ताहिक, फिर मासिक तथा त्रैमासिक उपचार-सफर अभी बाकी है, जिसे पूरा करना होगा, तभी उस उपचार का 65 से 70 प्रतिशत साफल्य-दर प्राप्त हो पाएगा।

इस पूरी यात्रा में प्रत्यक्ष रूप से मेरी पत्नी के साथ मुख्य भूमिका मेरी सभी बहनों, जीजा जी, बहनोई तथा ससुराल पक्ष की रही एवं परोक्ष रूप से मेरे शुभचिंतकों की दुआओं का। इस दौरान मैं दो लोगों का विशेष आभार प्रकट करता हूँ जिनमें एक हैं श्रीमती सुनीता दूबे, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), जिन्होंने मुझे रक्तदान करने के लिए रिसडा से न्यूटाउन तक का सफर तय किया परंतु उनका हीमोग्लोबिन मात्र एक प्रतिशत कम होने की वजह से रक्तदान स्वीकार्य नहीं हो पाया तथा दूसरे व्यक्ति हैं आई आई एम कलकत्ता के वेंडर श्री सोमनाथ सिंहा जिन्होंने अपने मित्रों द्वारा दो यूनिट ओ-नेगेटिव रक्त दिलवाया। हालांकि पूरी प्रक्रिया में अनुमानित से दुगुना मात्रा में यानि 10 यूनिट ब्लड एवं 9 यूनिट प्लेटलेट की व्यवस्था करनी पड़ी जिसके लिए परिवार के सदस्यों ने पता नहीं कहां-कहां हाथ पैर मारे होंगे।

इस उपचार संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण तथ्य मैं साझा करना चाहूंगा, जिससे हम भी ऐसे सैकड़ों ब्लड कैंसर पीड़ितों की मदद कर सकते हैं। भारत में हर साल औसतन 70000 लोगों की ब्लड कैंसर से मौत होती है। मान लीजिए किसी के परिवार में किसी को ब्लड कैंसर हो गया और कीमोथेरेपी तथा रेडिएशन के बाद भी उपचार सफल नहीं रहा तो एक मात्र जीवन बचाने का उपाय होता है स्टेम सेल ट्रांसप्लांट या अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण। जब हम खून की तलाश करते हैं तो मात्र 8 प्रकार के ब्लड ग्रुप होते हैं, अतः उसी ब्लड ग्रुप का इंसान मिलना बहुत मुश्किल नहीं होता। जबकि स्टेम सेल या बोन मैरो के

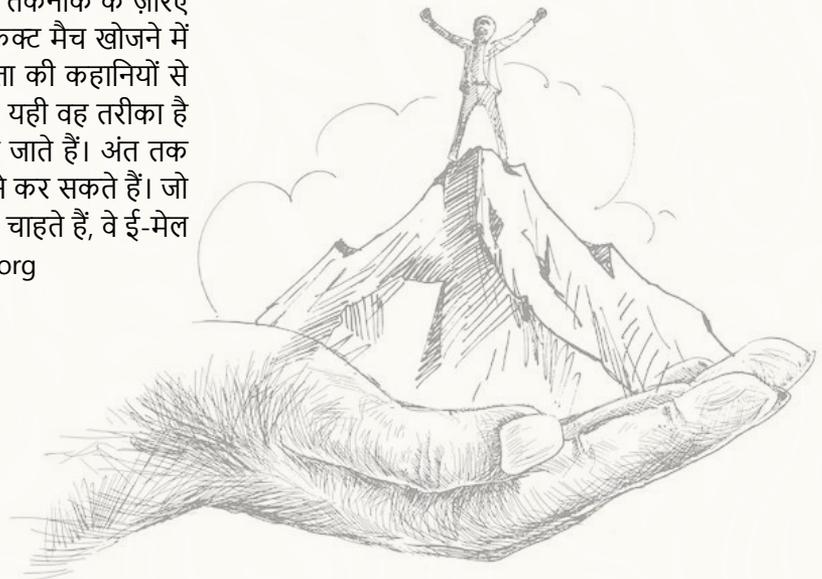
लिए एच एल ए टाइप का मैच होना जरूरी होता है जो कि 20000 से ज्यादा प्रकार का होता है। एच एल ए टाइप का मैच होना इतना मुश्किल होता है कि इसकी संभावना होती है 100000 लोगों में से मात्र एक की। इसलिए अगर परिवार में किसी का स्टेम सेल एच एल ए टाइप मैच नहीं होता है तो उसके लिए लगभग असंभव हो जाता है कि वह खुद से दाता ढूंढे। ऐसे में जर्मनी की डी.के.एम.एस. लाइफ साइंस लैब आपकी मदद के लिए सहायक भूमिका निभाने में तत्पर रहती है। दुनिया की सबसे उन्नत स्टेम सेल लैब्स में से एक — जर्मनी स्थित डी.के.एम.एस. लाइफ साइंस लैब — जो एक नॉन प्रॉफिट संस्था है। यह संस्था एक स्टेम सेल डोनर बैंक के रूप में काम करती है। यह दुनिया की सबसे बड़ी स्टेम सेल दाता रजिस्ट्री बनाकर रखती है, जिसमें 1500000 से भी ज्यादा पंजीकृत स्टेम सेल डोनर हैं। अगर आप भी ऐसे किसी की जान बचाने में अपना योगदान करना चाहते हैं तो आप भी इस महान संस्थान के साथ जुड़कर अपना दाता रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। इस संस्थान का भारत के प्रमुख शहरों के अस्पतालों के साथ टाइ-अप है जो इच्छुक डोनर को अपने संग्रह केंद्र में ले जाकर स्टेम सेल का दान करवाता है। दुनिया के किसी भी कोने में जरूरतमंद मरीज को एच एल ए टाइप मैच हो जाने पर दाता को जरूरतमंद मरीज तक पहुंचने की जिम्मेदारी इस संस्था की है। खास बात यह है जो भी दाता इसमें पंजीकृत होता है उसे डोनेशन के लिए किसी भी प्रकार का खर्च उठाने की आवश्यकता नहीं होती है यह डी.के.एम.एस. साइंस लैब की तरफ से बिल्कुल मुफ्त सेवा है। इस विषय पर विस्तृत जानकारी के लिए मैंने नीचे एक यूट्यूब लिंक साझा किया है जिसमें श्री ध्रुव राठी ने पूरे प्रक्रिया को अच्छी तरह से समझाया है। हम जान सकते हैं कि कैसे गाल का एक छोटा-सा स्वैब (cheek swab) किसी की जान बचा सकता है। जानिए कि कैसे भारतीय डोनर अत्याधुनिक डीएनए तकनीक के ज़रिए ब्लड कैंसर के मरीजों के लिए परफेक्ट मैच खोजने में मदद कर रहे हैं। वास्तविक सफलता की कहानियों से लेकर आम मिथकों के सच तक — यही वह तरीका है जिससे आम लोग जीवन रक्षक बन जाते हैं। अंत तक देखें और जानें कि आप भी यह कैसे कर सकते हैं। जो लोग डी.के.एम.एस. से संपर्क करना चाहते हैं, वे ई-मेल कर सकते हैं: info@dkms-india.org

उल्लेखित वीडियो के लिंक - <https://youtu.be/xsjNGcevbT8?si=GAWQzYmFE8Sx6dW7>

हम सभी मदद करना चाहते हैं, लेकिन कई बार सबसे बड़ी मदद सबसे आसान होती है — स्टेम-सेल डोनर बनना, जिसका पंजीकरण आप कर सकते हैं <https://www.dkms-india> के माध्यम से।

मेरे इस कैंसर उपचार प्रक्रिया की पूरी यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि बीमारी केवल शरीर को नहीं, बल्कि मन को भी परखती है। ऐसे समय में धैर्य, विश्वास और परिवार का संबल किसी भी दवा से कम नहीं होता। आपका दृढ़ मनोबल, परिवार का साथ, खुद पर तथा अपने ईश्वर पर भरोसा जीवन के किसी भी ऐसी विषम परिस्थितियों से हमें बाहर निकाल सकता है। जीवन का सुनहरा भविष्य, परिवार का लालन पोषण, बच्चों का भविष्य सब कुछ धुंधला और अनिश्चित सा दिखने लगता है। हमें पता नहीं कि आगे क्या होने वाला है। कैंसर केवल एक रोग नहीं है, यह जीवन को देखने का दृष्टिकोण बदल देता है। यह सिखाता है कि हर साँस की कीमत क्या होती है, और हर सुबह कितनी अनमोल है।

आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि यह संघर्ष मुझे तोड़ने नहीं, बल्कि गढ़ने आया था। मेरी यह कहानी उन सभी के लिए है जो किसी न किसी रूप में बीमारी से जुड़ रहे हैं—आशा कभी छोड़िए मत। सही समय पर जाँच, सही चिकित्सक पर भरोसा और अपनों का साथ—यही सबसे बड़ी ताकत है। एक भूतपूर्व फौजी होने के नाते मेरा यह मानना है कि जीवन संघर्षों से नहीं, उन्हें जीतने के साहस से महान बनता है। अतः “डर के आगे जीत है”, इस मंत्र को जरूर अपनाएं।





अनिदिता रुद्र

जिस दिन अमेरिकी राजदूत हमारे घर आए थे



यह लगभग एक सपना सच होने जैसा था, जब 5 जुलाई 2023 को एरिक हमारे घर आए। हमारी बहन नीता, जो यू.एस.ए. की एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं, अपनी बेटी के साथ किसी काम से नई दिल्ली आई थीं। एक दिन उन्होंने हमें फ़ोन करके बताया कि वे हमसे मिलने कोलकाता आएँगी, हालाँकि उनकी यात्रा बहुत छोटी होगी, और उनके एक मित्र एरिक भी उनके साथ आएँगे, क्योंकि उन्होंने एक भारतीय घर देखने की इच्छा जताई थी।

एक तिथि और समय तय हुआ—5 जुलाई को रात लगभग 8:30 बजे। हमारे घर में विदेशी मेहमानों का आना कोई नई बात नहीं है और एरिक के आने से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ने वाला था। लेकिन जब मुझे पता चला कि यह एरिक कोई और नहीं, बल्कि एरिक गार्सेटी हैं—जो संयुक्त राज्य अमेरिका के भारत गणराज्य में राजदूत हैं—तो मेरे पेट में तितलियाँ उड़ने लगीं। अब हम यू.एस. के राजदूत का स्वागत कैसे करेंगे? यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, लेकिन हमने इस यात्रा को सफल बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया।

पूरे दोपहर पुलिसकर्मी हमारे घर आते रहे, परिसर की जाँच करते रहे और श्री गार्सेटी की यात्रा के उद्देश्य के बारे में जानकारी लेते रहे, क्योंकि उन्हें राजदूत की यात्रा के दौरान Z+ सुरक्षा प्रदान करनी थी। स्थानीय पुलिस थाने से चार लोग, यू.एस. दूतावास के प्रतिनिधि और जैसे-जैसे यात्रा का समय नज़दीक आता गया, कई पुलिसकर्मियों से भरी पुलिस वैन हमारे घर के चारों ओर तैनात हो गईं।

अंततः लाल और नीली बत्तियों वाली एक बड़ी कार आई, जिसका सायरन पूरी आवाज़ में बज रहा था।

उसके आगे पायलट कारें थीं और पीछे यू.एस. दूतावास के कर्मचारियों की गाड़ियाँ थीं। माननीय राजदूत कार से उतरे और भारतीय रीति-रिवाज के अनुसार हाथ जोड़कर अभिवादन किया। उन्होंने हमारे ड्राइंग रूम में प्रवेश करने से पहले जूते उतारने के लिए झुकने की कोशिश की, लेकिन हमने उन्हें ऐसा करने से मना किया। उन्होंने कहा कि हर देश की जो रीति होती है, उसका सम्मान अवश्य करना चाहिए।

बैठने के बाद उन्होंने कहा कि हमसे मिलकर उन्हें बहुत खुशी हुई। मैंने मुस्कुराते हुए कहा कि यह तो बिल्कुल उल्टा है—हमारे लिए यह सपनों से परे था कि यू.एस. के राजदूत हमारे साधारण से घर आएँगे। इस पर श्री गार्सेटी ने उत्तर दिया कि यदि हम उन्हें एक मित्र के रूप में स्वीकार करें, तो उन्हें अत्यंत प्रसन्नता होगी, क्योंकि वे हमारी भतीजी के मित्र हैं।

कुछ शिष्टाचारपूर्ण बातचीत के बाद, जो मुख्यतः मेरे परिवार के सदस्यों से संबंधित थी, नीता ने बताया कि उन्हें रात्रि-भोज के लिए पास के एक रेस्तराँ में जाना है, जहाँ परिवार के अन्य सदस्य प्रतीक्षा कर रहे हैं। माननीय राजदूत ने हाथ जोड़कर हम सभी को शुभ रात्रि कहा और सायरन बजाते हुए वहाँ से प्रस्थान कर गए।

वे चले तो गए, लेकिन अपने पीछे एक गहरी छाप छोड़ गए—एक सुखद अनुभूति, एक फील-गुड नैरेटिव। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि अब तक मैं किसी ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति से नहीं मिला, जो श्री एरिक गार्सेटी जितना विनम्र, सहज और मिलनसार हो।





जया सिंह

मेरी सबसे प्रिय यात्रा: माँ वैष्णो देवी के पावन धाम तक



भारत का प्रत्येक कोना अपनी अनूठी सुंदरता और महत्ता से भरा है। कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है, कन्याकुमारी त्रिवेणी संगम के लिए प्रसिद्ध है, दारिगबाड़ी को ओडिशा का कश्मीर कहा जाता है और राजस्थान वीरों व रंगों की भूमि के रूप में जाना जाता है। सच ही है, यँ ही भारत को सोने की चिड़िया नहीं कहा जाता।

सन् 2020 में जब कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया को थाम लिया था, तब घर में कैद जीवन और चारों ओर की नकारात्मक खबरों ने मन को अत्यंत व्याकुल कर दिया था। ऐसे कठिन समय में मैंने और मेरी बहन ने माता वैष्णो देवी के दर्शन का निश्चय किया और जनवरी 2021 में यात्रा पर जाने का निर्णय लिया। वैक्सीनेशन प्रमाणपत्र और कोविड जाँच की सभी औपचारिकताएँ पूर्ण कर हम कोलकाता से जम्मू पहुँचे। हर कदम पर जाँच और सावधानियों के बीच मन में भय भी था और अटूट आस्था भी।

जम्मू पहुँचते ही तेज़ वर्षा और कड़ाके की ठंड ने हमारा स्वागत किया। जनवरी का दूसरा सप्ताह हमने सोच-समझकर चुना था, क्योंकि इस समय भीड़ कम होती है और सौभाग्यवश माता रानी की प्राचीन गुफा के दर्शन का अवसर भी मिल सकता है। परंतु खराब मौसम देखकर हमारा साहस कुछ डगमगाने लगा। चालक ने भी मौसम के और अधिक बिगड़ने की संभावना जताई। हमने विश्राम कर अगले दिन यात्रा प्रारंभ करने का निश्चय किया।

अगली सुबह मूसलाधार वर्षा और घने अंधकार को देखकर मन निराश हो उठा। घर से भी सावधानी बरतने की सलाह मिल रही थी। तभी मेरी बहन ने दृढ़

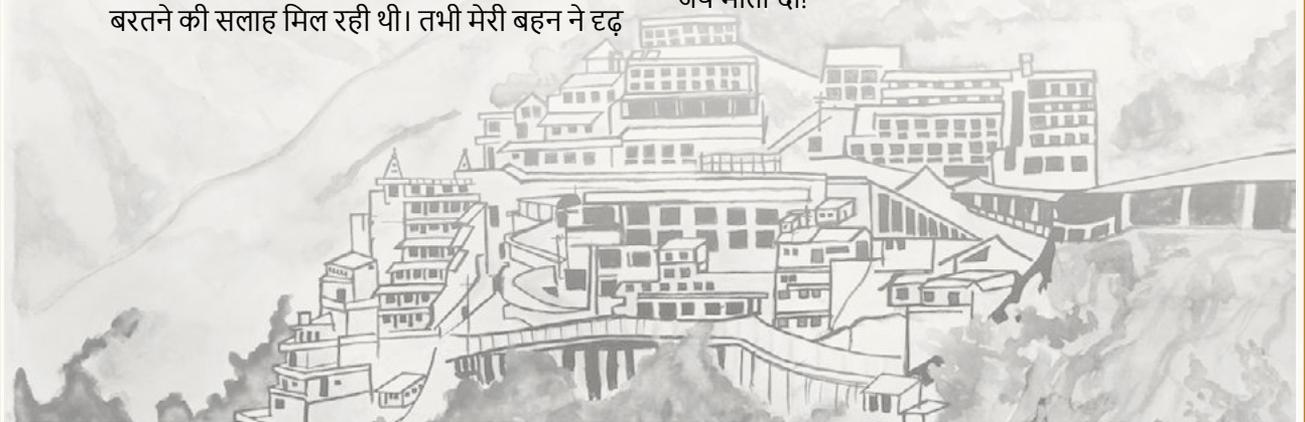
स्वर में कहा, “हम यहाँ रुकने नहीं, माता के दर्शन करने आए हैं।” उसके आत्मविश्वास ने मुझे भी साहस दिया और हम बाणगंगा के लिए निकल पड़े। वहाँ श्रद्धालुओं की लंबी कतार देखकर विश्वास हुआ कि आस्था के आगे हर कठिनाई छोटी पड़ जाती है।

दोपहर लगभग ढाई बजे हमने यात्रा प्रारंभ की। वर्षा और कड़ाके की ठंड के बीच “जय माता दी” के उद्घोष के साथ हम आगे बढ़ते रहे। अर्धकुंवारी पहुँचते-पहुँचते रात्रि हो चुकी थी। दर्शन के पश्चात कुछ समय विश्राम कर हम भवन की ओर अग्रसर हुए। पूरी रात चढ़ाई करने के बाद प्रातः तीन बजे जब हम भवन पहुँचे, तो चारों ओर बर्फ की श्वेत चादर बिछी थी। वह दृश्य अत्यंत अद्भुत और अविस्मरणीय था—मानो स्वर्ग धरती पर अवतरित हो गया हो।

माता रानी के दर्शन के पश्चात हम भैरव बाबा के दर्शन के लिए आगे बढ़े। बर्फ से ढकी राह और तीव्र ठंड के बीच मन में केवल एक ही प्रार्थना थी कि यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण हो। भैरव बाबा के दर्शन के साथ ही सूर्यदेव की सुनहरी किरणें बर्फ पर पड़ने लगीं। वह दृश्य ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो श्वेत चादर पर स्वर्णिम आभा बिखर गई हो।

उस क्षण अनुभूति हुई कि यदि हम भयवश रुक जाते, तो इस अलौकिक अनुभव से वंचित रह जाते। यही कारण है कि माँ वैष्णो देवी की यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे प्रिय, प्रेरणादायक और अविस्मरणीय यात्रा है—जहाँ भय भी था, संघर्ष भी था, किंतु अंततः आस्था और विश्वास की ही विजय हुई।

जय माता दी!





प्रियंका चटर्जी

पर्वत: मौन में बोलती जीवन की साधना



पर्वत केवल प्रकृति की भव्य रचना नहीं हैं, वे भारतीय मिथक और जीवन-दर्शन की जीवंत साधना हैं। पुराणों में पर्वतों को स्थावर देवता माना गया है—मौन में स्थित, परंतु चेतना से परिपूर्ण। वे शब्दों से नहीं, अपने अस्तित्व से उपदेश देते हैं। जब मनुष्य भीतर के कोलाहल से थक जाता है, तब पर्वत उसे उसी शांति में शरण देते हैं, जैसी शरण हिमालय ने देवताओं और ऋषियों को दी थी। ऊँचे शिखर, गहरी घाटियाँ, शीतल पवन और अविरल झरने—सब मिलकर मानो यही कहते हैं कि जीवन का सौंदर्य सादगी और स्थिरता में है, आडंबर में नहीं।

भारतीय पौराणिक परंपरा में हिमालय को देवों का पिता और माता पार्वती का जनक कहा गया है। शिव का कैलास पर निवास इसी सत्य का प्रतीक है कि सर्वोच्च चेतना को वैभव नहीं, मौन और वैराग्य प्रिय है। हिमालय की अडिग उपस्थिति हमें धैर्य और तपस्या का पाठ पढ़ाती है—युगों से धूप, वर्षा, आँधी और हिमपात सहते हुए भी स्थिर। जैसे शास्त्र कहते हैं—

“क्षमा वीरस्य भूषणम्।”

क्षमा और सहनशीलता ही वीर का आभूषण है।

पर्वत इसी वीरता के सजीव रूप हैं—न विरोध, न शिकायत; केवल अपने धर्म पर अडिग स्थिति। मनुष्य यदि जीवन-संघर्षों में हिमालय-सा धैर्य धारण कर ले, तो कोई संकट उसे विचलित नहीं कर सकता।

पर्वतों की सादगी हमें पौराणिक कथाओं की स्मृति दिलाती है, जहाँ ऋषि-मुनि वन और पर्वतों में रहकर भी पूर्ण जीवन जीते थे। कम साधनों में भी संतोष और

समृद्धि का अनुभव वहीं संभव हुआ। इसी भाव को उपनिषद् स्मरण कराते हैं—

“संतोषः परमं सुखम्।”

संतोष ही परम सुख है।

आज का मनुष्य अधिक पाने की लालसा में भीतर से रिक्त होता जा रहा है, जबकि पर्वत हमें बताते हैं कि पूर्णता बाहरी संग्रह में नहीं, आंतरिक संतुलन में है।

भावनाओं के स्तर पर भी पर्वत हमारे अत्यंत निकट हैं। जैसे गंगा का हिमालय से अवतरण लोककल्याण के लिए हुआ, वैसे ही पर्वत हमारे दुखों को बिना प्रश्न किए स्वीकार कर लेते हैं। उनकी नीरवता आँसुओं को आश्रय देती है, और वही मौन हमारी मुस्कान का साक्षी बन जाता है। यह शांति भीतर के विक्रोभ को शांत कर आत्मा को स्थिर कर देती है।

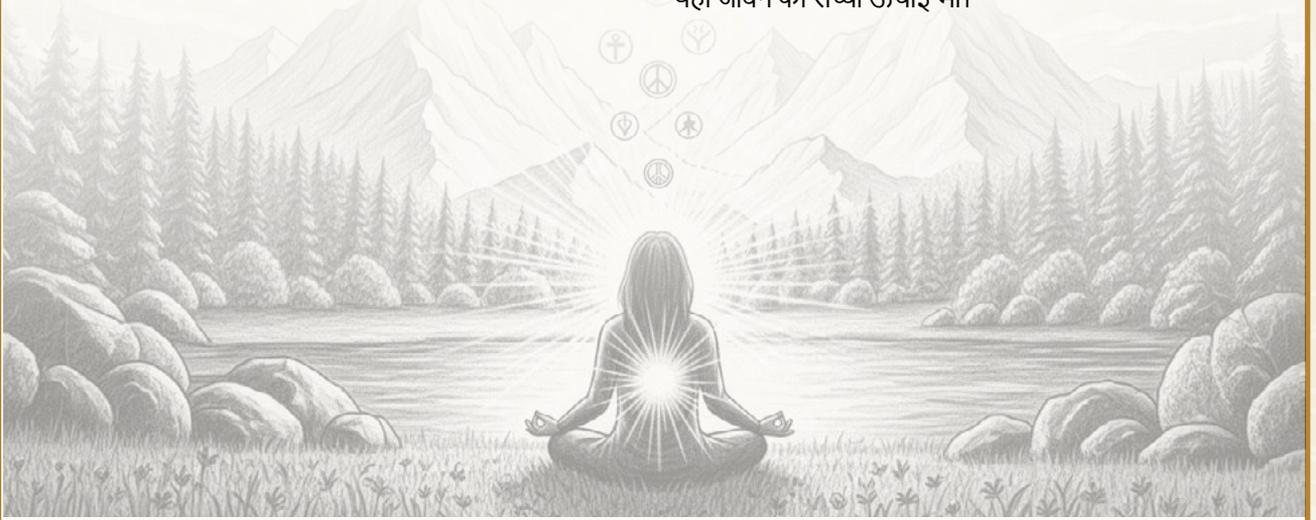
पर्वत हमें यह भी सिखाते हैं कि प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं, समन्वय आवश्यक है। वैदिक उद्घोष—

“माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।”

धरती हमारी माता है और हम उसके पुत्र।

यह भाव पर्वतों में सजीव है। यदि हम पर्वतों जैसी सादगी, स्थिरता और मौन की शक्ति को अपने जीवन में उतार लें, तो जीवन बोझ नहीं, साधना बन सकता है।

अंततः, पर्वत हमें ऊँचा होना नहीं, गहरा होना सिखाते हैं—विनम्रता में शिव-भाव, धैर्य में हिमालय-स्वरूप और संतुलन में ऋषियों की साधना। यही पर्वत की पौराणिक शिक्षा है, और यही जीवन की सच्ची ऊँचाई भी।





प्रियंका दासगुप्ता

तिरुपति बालाजी दर्शन: मेरा 2025 का अनुभव



2025 के 17 सितंबर की सुबह हम तीनों—मैं, मेरा पति और 11 साल की बेटी—कोलकाता से तिरुपति के लिए निकले। हमने एसएमवीटी बेंगलुरु दुरंतो एक्सप्रेस की फर्स्ट क्लास कूपे में सफ़र किया। यात्रा शानदार रही! कूपे में बैठे-बैठे खिड़की से हरी-भरी वादियाँ, खेत और पहाड़ियाँ देखते रहे। भारतीय रेल की खाना-सेवा कमाल की थी। पैट्री स्टाफ का व्यक्तिगत ध्यान इतना प्यारा था कि लगा घर जैसा सफ़र हो रहा हो। 18 सितंबर की सुबह हम रेनिगुंटा पहुँचे।

यह मेरा तिरुपति का तीसरा दर्शन था—पहले 1993 और 1997 में माता-पिता के साथ गई थी। तब फ़्री दर्शन की लंबी कतारें याद हैं, जबकि वी.आई.पी. लाइन तब भी थीं, लेकिन हम लोग उसके बारे में जानते नहीं थे। इस बार पति और बेटी का पहला दर्शन था, इसलिए मैंने जून में ही टी.टी.डी. ऐप से टिकट बुक किए—24 जून को सितंबर के पूरे महीने के टिकट खुले, और 10-15 मिनट में पूरे महीने की टिकट बुक हो गईं। मुझे 18 सितंबर रात 9 बजे का स्लॉट मिला, जबकि मैं शनिवार या रविवार की सुबह का टाइम स्लॉट लेने की कोशिश कर रही थी। आधार डिटेल्स मैंने तैयार रखी थीं और यूपीआई से पेमेंट किया, जो कार्ड पेमेंट से जल्दी होता है। साथ ही, मंदिर परिसर में गेस्ट हाउस भी बुक किया।

रेनिगुंटा स्टेशन से टैक्सी लेकर हम तीनों तिरुमाला पहुँचे और गेस्ट हाउस में चेक-इन किया। दोपहर में स्थानीय रेस्टोरेंट में साउथ इंडियन थाली हम सबने खाई—शुद्ध शाकाहारी और बहुत ही स्वादिष्ट। थोड़ा आराम किया, फिर शाम 8 बजे पारंपरिक कपड़ों में (महिलाओं के लिए दुपट्टा अनिवार्य, पुरुषों के लिए धोती/पायजामा) मंदिर की ओर हम तीनों चल पड़े।

ए.टी.सी. सर्कल पर हम अपने निर्धारित समय से एक घंटा पहले पहुँचे, लेकिन रात में भी भारी भीड़ थी। जूते उतारकर नंगे पाँव चलने लगे। सब “गोविंदा-गोविंदा... गोविंदा” नाम ले रहे थे। कतार रुकती तो ज़मीन पर बैठ जाते, और “गोविंदा” का नाम सुनते ही

उठ जाते और फिर चलने लगते। बेटी आश्चर्यचकित थी—कोलकाता के दुर्गा पूजा पंडाल से भी ज़्यादा लोग! पति (जो नास्तिक हैं) हैरान थे कि फोन छोड़कर इतने लोग सिर्फ़ भक्ति के लिए इतनी बड़ी लाइन में चुपचाप इंतज़ार कर रहे थे। तीन महीने पहले बुकिंग के बावजूद हम लोगों को दर्शन में 6 घंटे लगे। थकान चरम सीमा पर पहुँच गई—बेटी को बुखार (102°F) आ गया था और हम हार मानने को तैयार थे। पति ने सिक्योरिटी से पूछा कि क्या वापस लौट सकते हैं, लेकिन स्टाफ और भक्तों ने प्रेरित किया—“इतनी दूर आए हो, बस 30-45 मिनट और!” यही आशा हमें आगे ले गई।

आखिरकार रात 1:30 बजे दर्शन मिला। बालाजी की स्वर्णमय मूर्ति इतनी जीवंत लगी कि सारी थकान भूल गई; मन में केवल कृतज्ञता का भाव था। मैंने मन ही मन धन्यवाद दिया कि हम यहाँ तक पहुँच सके। मंदिर का वातावरण किसी दूसरे लोक जैसा था—यहाँ अजनबी भक्त भी एक-दूसरे से जुड़े हुए महसूस होते हैं।

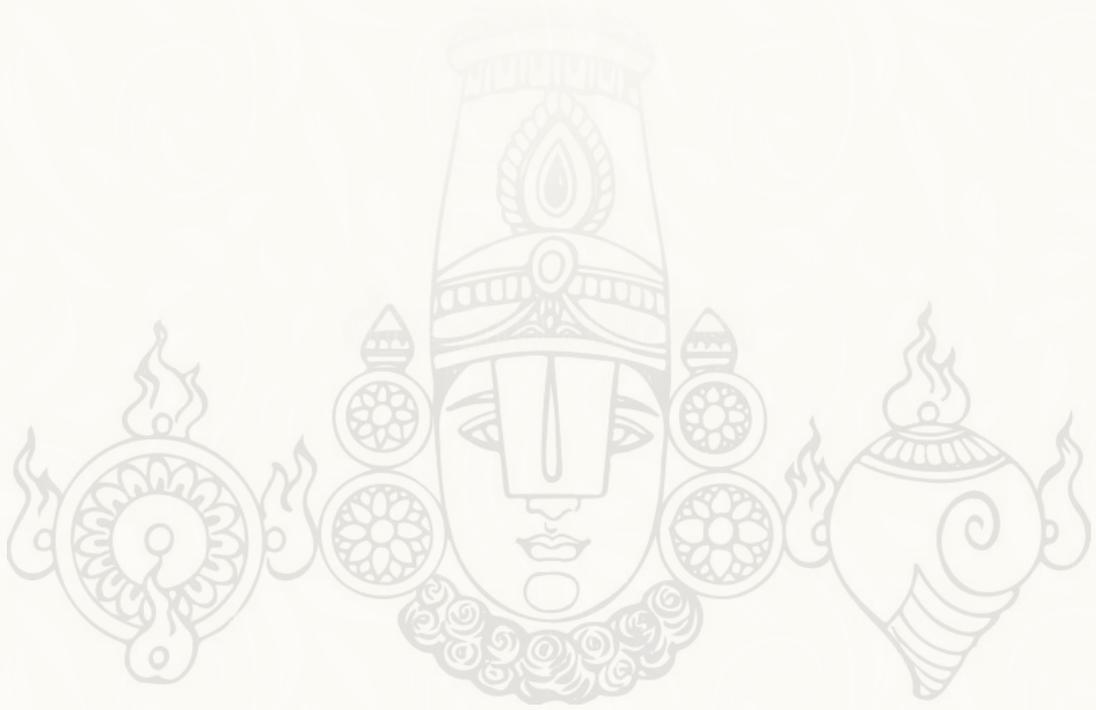
दर्शन के बाद बाहर निकलने में फिर 1 घंटा लगा। माँ-बेटी एक कोने में बैठ गईं और पति लड्डू लेने गए (जो टिकट बुकिंग के समय ही ऑर्डर किए थे)। रात 2-2:30 बजे बारिश शुरू हो गई—सब भीग गए, फिर भी “गोविंदा” की चैटिंग जारी रही। जहाँ हम दोनों बैठे थे, वहाँ एक और भक्त हमसे पूछने लगे कि दर्शन हो पाया या नहीं, क्योंकि उनका दर्शन नहीं हो पाया था। मैंने कारण पूछा तो बोले कि 19 घंटे लाइन में रहने के बाद उन्हें बाहर निकाल दिया गया—शायद भगवान उन्हें इतनी जल्दी दर्शन नहीं देना चाहते थे। सुनकर बुरा लगा और यह भी एहसास हुआ कि कितनी बार ऐसा होता है कि हम लोग दर्शन कर पाते हैं! बेटी बुखार से कमजोर थी और कोने में बैठी यह सब सुन रही थी।

रात का समय था, ऊपर से मौसम भी खराब था। गेस्ट हाउस पास में होने के बावजूद पति ने पास के टैक्सी वाले से गुज़ारिश की, और उसने दयालुता दिखाते हुए

हमें गेस्ट हाउस तक छोड़ दिया। कमरे में पहुँचे तो तेज़ बारिश-आंधी शुरू हो चुकी थी। काँच की एक खिड़की टूट गई और पूरे कमरे में ठंडी हवा भर गई। बेटी थकान से सो गई थी और हम दोनों चुपचाप रात के गुजरने की राह देख रहे थे।

सुबह वातावरण शांत और सुंदर था। स्थानीय आंटी से नाश्ते में इडली खाई, फिर लौटने का सफ़र शुरू किया। अन्य स्पॉट घूमने का समय नहीं मिला, लेकिन लड्डू रिश्तेदारों के लिए ले लिए थे। हम लोग वापसी के लिए बेंगलुरु से कोलकाता की फ्लाइट पकड़कर लौट आए।

भीड़, रात का समय, बुखार और बारिश जैसी चुनौतियाँ रहीं, लेकिन भक्ति और भक्तों के सहयोग ने दिल जीत लिया। इस सफ़र में लाइन में लगे भक्तों का प्रोत्साहन, टैक्सी वाले की दयालुता और परिवार का साथ हमेशा यादगार रहेगा। यह यात्रा मुझे यह सिखा गई कि धैर्य, विश्वास और सेवा से कोई लक्ष्य असंभव नहीं। पति का नज़रिया बदला और बेटी को भक्ति का पाठ मिला। व्यक्तिगत रूप से मेरा यह सफ़र अविस्मरणीय रहा और मैं फिर से एक बार जाना चाहूँगी।





पायल मजुमदार

धीरता ही स्थिरता है

आज की दुनिया तेज़ रफ्तार की दुनिया बन चुकी है। हम हर चीज़ तुरंत चाहते हैं—30 मिनट में पिज़्ज़ा, 10 मिनट में सामान, एक क्लिक में संतुष्टि। लेकिन जीवन डोमिनोज़ की डिलीवरी या बिलिंकिट की स्पीड नहीं है। जीवन उससे कहीं अधिक गहरा, संवेदनशील और मूल्यवान है। इसे जल्दी-जल्दी निपटाने की चीज़ नहीं, बल्कि धीरे-धीरे जीने की प्रक्रिया है।

जब हम हर काम में जल्दबाज़ी करते हैं, तो हम केवल परिणाम पर ध्यान देते हैं, अनुभव पर नहीं। जीवन का असली आनंद अनुभवों में छिपा होता है—सीखने की प्रक्रिया में, इंतज़ार के क्षणों में, और उस मेहनत में जो किसी मंज़िल तक पहुँचने में लगती है। जो चीज़ें शॉर्टकट से मिलती हैं, वे क्षणिक खुशी तो देती हैं, लेकिन उनका असर जल्दी खत्म हो जाता है।

जीवन को जल्दबाज़ी में जीना उसकी गहराई को खो देना है। यही भाव प्राचीन शास्त्रों में भी अत्यंत सुंदर रूप से कहा गया है—

“शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम्।

शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः॥”

शनैः पन्थाः — जीवन का मार्ग धीरे-धीरे तय करना चाहिए।

शनैः कन्था — जैसे कपड़ा एक-एक धागे से बुना जाता है, वैसे ही जीवन की नींव भी छोटे-छोटे प्रयासों से बनती है।

शनैः पर्वतलङ्घनम् — जैसे ऊँचे पर्वत को एक छलांग में पार नहीं किया जा सकता। वैसे ही जीवन में बड़ी चुनौतियाँ क्रमिक प्रयास और निरंतर साहस से ही पार की जा सकती हैं।

शनैर्विद्या — ज्ञान कभी भी तुरंत प्राप्त नहीं होता। अध्ययन, अनुभव और चिंतन से वह धीरे-धीरे गहरी और स्थायी बनती है।

शनैर्वित्तं — धन भी परिश्रम, अनुशासन और समय के साथ अर्जित होता है। जल्दी कमाया गया धन अक्सर टिकता नहीं, जबकि मेहनत से कमाया गया धन स्थायित्व देता है।

यह श्लोक जीवन के पाँच महत्वपूर्ण पक्षों को “शनैः-शनैः” अर्थात् धीरे-धीरे, क्रमशः प्राप्त होने वाले सत्य के रूप में उदाहरणों द्वारा समझाता है। यह श्लोक हमें सिखाता है कि स्थायित्व और सार्थकता हमेशा धीरे-धीरे किए गए प्रयासों से ही आती है। जीवन को भी उसी तरह जीना चाहिए—संयम, धैर्य और संतुलन के साथ।

इसलिए हर चीज़ के लिए दौड़ना ज़रूरी नहीं। कभी-कभी रुकना, इंतज़ार करना और प्रक्रिया का आनंद लेना ही जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है। जीवन को जल्दबाज़ी में नहीं, बल्कि समझदारी और संवेदनशीलता के साथ जीना चाहिए—क्योंकि जीवन एक यात्रा है, कोई एक्सप्रेस डिलीवरी नहीं।





मानसी सान्याल

जागेश्वर उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले की पहाड़ियों में बसा एक रमणीय गाँव है। शादी के बाद से ही मैं अपने पति से इसकी शांति और सुंदरता के बारे में सुनती आ रही थी। पिछले कुछ वर्षों में, वह अक्सर वहाँ जाते थे और कहते थे कि उन्हें लगता है कि वह सचमुच वहीं के हैं। इसके बारे में इतना कुछ सुनकर स्वाभाविक रूप से मेरी जिज्ञासा बढ़ गई।

मुझे अपने पति की एक बात बहुत पसंद है कि मुझे बस इतना कहना होता है कि मैं यात्रा करना चाहती हूँ—और वह तुरंत तैयार हो जाते हैं। सड़क यात्रा को वो कभी मना नहीं करते। तो हमने योजना बनाना शुरू किया, अपनी सबसे अच्छी दोस्त को साथ लिया और 12 सितंबर 2025 की शाम को निकल पड़े।

हम रात भर गाड़ी चलाते रहे और 13 तारीख की दोपहर तक वाराणसी पहुँच गए। उस दिन वही टहरे और फिर 14 तारीख की सुबह हमने अपनी यात्रा फिर से शुरू की और शाम तक टनकपुर पहुँच गए, जहाँ हमने रात बिताई। पीलीभीत राष्ट्रीय वन से होकर शाम का सफर बेहद रोमांचक था—अंधेरा, शांत और अपने आप में एक अलग ही रोमांचकारी अनुभव।

रात को अच्छी नींद और अगले दिन भरपेट नाश्ते के बाद, हम 15 तारीख को जागेश्वर की ओर चल पड़े। टनकपुर पार करते ही हमें पहाड़ों की पहली झलक दिखाई दी। सड़क ऊपर चढ़ने लगी, कोहरे से ढके रास्तों, टूटे-फूटे पैवों और पहाड़ियों में चल रहे सड़क निर्माण कार्यों के बीच से होकर गुज़र रही थी, जहाँ जेसीबी मशीनें रास्तों की मरम्मत कर रही थीं। जैसे ही हमने पहाड़ों की ताज़ी हवा में सांस ली, हमारा मन तुरंत खुश हो गया।

हम अपनी गति से गाड़ी चला रहे थे, बीच-बीच में रुककर तस्वीरें खींच रहे थे और आसपास के नज़ारों का आनंद ले रहे थे। शाम होते-होते हम जागेश्वर पहुँचे और संध्या आरती के दौरान घाटी में गूँजती मंदिर की घंटियों की आवाज़ ने हमारा स्वागत किया।

उसी क्षण मुझे समझ आया कि मेरे पति को यह जगह इतनी पसंद क्यों है।

पूरा गाँव घने देवदार के जंगल में बसा है, जिसके किनारे जट गंगा नदी धीरे-धीरे बह रही है। न भीड़ थी, न गाड़ियों के हॉर्न—बस ताज़ी हवा, शांति और एक अद्भुत सुकून का एहसास।

हमने अपने पहले से बुक किए हुए गेस्ट हाउस में चेक-इन किया। फ्रेश होने के बाद, हम बरामदे में गरमागरम चाय और पकौड़े लेकर बैठ गए, नदी की धीमी कलकल और पहाड़ों की गहरी शांति को सुनते हुए। ऐसा लगा जैसे समय धीमा हो गया हो—बिल्कुल वैसे ही जैसे होना चाहिए।

हम घंटों तक वहाँ बैठकर बातें करते और सुनते रहे, जब तक कि चौकीदार पारंपरिक कुमाऊँनी भोजन लेकर नहीं आ गया। तब हमें एहसास हुआ कि हमने लगभग चार घंटे बिना फ़ोन देखे ही बिता दिए थे। उस जगह में कुछ ऐसा था जिसने समय और स्क्रीन दोनों को अनावश्यक बना दिया था। भोजन के बाद, संतुष्ट और थोड़ी थकी हुई, हम रात के लिए सो गए।

अगली सुबह, हम जल्दी उठे। सुबह के काम निपटाने के बाद, हम दर्शन के लिए मंदिर गए। लोककथाओं के अनुसार, भगवान शिव ने यहाँ सप्तऋषियों के साथ ध्यान किया था, और जागेश्वर को प्राचीन कैलाश मानसरोवर मार्ग पर स्थित चौथा ज्योतिर्लिंग माना जाता है। यह भी कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य ने इन मंदिरों का पुनर्स्थापन किया था, जिन्हें बाद में 7वीं और 14वीं शताब्दी ईस्वी के बीच कात्युरी वंश द्वारा पुनर्स्थापित किया गया था। सदियों पुरानी आस्था, इतिहास और मौन के बीच खड़े होकर, यह अनुभव अत्यंत विनम्रतापूर्ण था।

दर्शन और पूजा के बाद, हम गेस्ट हाउस लौट आए, नाश्ता किया और फिर दिन भर के लिए निकल पड़े। हमारी योजना कासर देवी मंदिर, झखर सेम मंदिर और वृद्ध जागेश्वर जाने की थी। इसके बाद का दिन

बिना योजना के घूमने और अचानक रुकने में बीत गया—क्योंकि दुनिया के इस हिस्से में, हर मोड़ किसी खूबसूरत नज़ारे जैसा लगता है, और लगभग हर जगह क मंदिर है जिसकी अपनी एक कहानी है। इसीलिए उत्तराखंड को देवभूमि कहा जाता है।

अगले दो दिन भी कुछ इसी तरह बीते—छोटे कस्बों और शांत गांवों से गुज़रते हुए, पहाड़ों की विशालता और घाटियों की गहराई में खोते हुए, जब मन हुआ तब

रुकते हुए। कोई जल्दबाजी नहीं थी, कोई तय योजना नहीं थी—बस वर्तमान क्षण का आनंद था।

जैसा कि सभी अच्छी चीजों का अंत होता है, जागेश्वर में हमारा तीन दिन का प्रवास आखिरकार समाप्त हो गया। अब 1500 किलोमीटर वापस जाने का समय था। दिल में अफ़सोस लिए हमने उस शांत गांव को अलविदा कहा और कोलकाता के लिए अपनी यात्रा शुरू की।





मैत्रेयी बनर्जी



हर दोपहर मैं अपने दोस्तों के साथ पास के पार्क में खेलने जाती हूँ। मैं एक दस साल की चंचल लड़की हूँ, जो अपने माता-पिता और दोस्तों से बेहद प्यार करती है। मेरी सबसे अच्छी दोस्त तान्या है।

मेरे माता-पिता मुझे अपनी "राजकुमारी" कहते हैं। मेरे सपनों को पूरा करने के लिए वे कोई कसर नहीं छोड़ते। एक शाम, रोज़ की तरह खेलकर लौटने के बाद, तान्या यह साबित करने लगी कि उसके पापा सबसे अच्छे हैं। मैं बार-बार कहती रही, "मेरे पापा भी मुझसे बहुत प्यार करते हैं," लेकिन तान्या के आत्मविश्वास के सामने मेरी बातें कमज़ोर पड़ गईं।

उसने अपने पापा के प्यार के उदाहरण देते हुए विदेशी जगहों की शानदार यात्राओं, जन्मदिन पर मिलने वाले महंगे तोहफ़ों, बड़े-बड़े मॉल से खरीदे गए सुंदर कपड़ों, ढेर सारी स्टेशनरी और बहुत कुछ के बारे में बताया। मैंने भी अपनी बातें मिलाने की कोशिश की, लेकिन जल्दी ही मेरे पास उदाहरण खत्म हो गए।

कुछ दिनों बाद मैंने देखा कि तान्या स्कूल नहीं आ रही है और मुझे उसकी बहुत याद आने लगी। लगभग दो हफ्तों तक वह अनुपस्थित रही। मैंने अपनी माँ से अपनी चिंता बताई। माँ ने समझाया कि शायद वे कहीं छोटी-सी यात्रा पर गए होंगे। यह जवाब मुझे पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर पाया, लेकिन मैंने मान लिया।

उस शाम जैसे ही मेरे पापा ऑफिस से लौटे, मैं दौड़कर उनके पास गई और बोली,

"बाबा, तान्या कई दिनों से स्कूल नहीं आ रही है। मुझे उसकी बहुत याद आती है।"

"चिंता मत करो, अनु," पापा बोले, "कल मैं उसके पापा को फोन करूँगा। मेरे पास उनका नंबर है।"

मैं बहुत खुश हो गई। एक बार फिर साबित हो गया कि मेरे पापा मेरे हीरो हैं—वे मेरी हर समस्या का हल निकाल सकते हैं।

मैंने पापा द्वारा लाई गई किराने की थैली ली और उसमें से अपनी 'लूट' खोजने लगी।

"फिर से ये भद्दे-से पैकेट ले आए," मैंने कहा।

"ठीक है बेटा, आखिरी बार ले रहा हूँ," पापा बोले।

"आप हमेशा यही कहते हैं, लेकिन वह आखिरी बार कभी नहीं आता," कहते हुए मैंने सारे पैकेट इकट्ठा किए और लगभग कचरे में फेंक ही देने वाली थी कि पापा दौड़कर आए और मेरा हाथ पकड़ लिया।

"तुम्हें पता है ये कितने महंगे हैं? ऐसे ही कैसे फेंक सकती हो?" पापा चिल्लाए।

दर्द और अपमान से मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मुझे उन सिगरेट के पैकेटों से भी छोटा महसूस हुआ। मैं अपने कमरे में जाकर फूट-फूटकर रोने लगी।

कुछ देर बाद पापा आए और मुझे गले लगा लिया।

"मुझे माफ़ कर दो बेटा। पता नहीं मुझे क्या हो गया था। मैं दोबारा कभी ऐसा नहीं करूँगा।"

"बाबा," मैंने उन्हें कसकर पकड़ते हुए कहा, "आप सिगरेट क्यों नहीं छोड़ देते? विज्ञापनों में दिखाते हैं कि लोग कितनी भयानक तरह से मर जाते हैं। मैं आपको खोना नहीं चाहती।"

"अरे मेरी बच्ची," पापा मुस्कराए, "ये तो बस विज्ञापन हैं। असल में कुछ नहीं होता। तुम्हारा बाबा बिल्कुल ठीक है और कहीं नहीं जाने वाला।"

मैंने उनकी बात मान ली—आखिर वे मेरे सुपरहीरो थे।

"अब ये सब छोड़ो," पापा बोले, "बताओ, इस बार जन्मदिन कैसे मनाएँ?"

नवंबर शुरू होते ही मुझे खुद को एक असली राजकुमारी जैसा महसूस होने लगता है, क्योंकि मेरा जन्मदिन 22 तारीख को होता है।

"शानदार तरीके से, बाबा—जैसे हमेशा मनाते हैं।"

अगले दिन स्कूल में तान्या को देखकर मैं बहुत खुश हो गई।

"तुम इतने दिनों कहाँ थीं? मुझे तुम्हारी बहुत याद आई," मैंने एक ही साँस में कह दिया।

तान्या ने मुझे गले लगाया और रोने लगी।

“क्या हुआ तान्या? तुम क्यों रो रही हो? यात्रा कैसी रही?”
मैंने पूछा।

वह मुझे छोड़ ही नहीं रही थी।

“क्या बात है? बताओ,” मैंने घबराकर पूछा।

“मैंने अपने हीरो—अपने पापा को खो दिया,” वह
सिसकते हुए बोली। “उन्हें कैंसर हो गया था।”

मुझे अपनी कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

“ये कैसे हुआ?” मैंने काँपती आवाज़ में पूछा।

उसने बताया कि ज़्यादा सिगरेट पीने से उनके फेफड़े
खराब हो गए थे और आखिरकार वे कैंसर से हार गए।
मेरी दुनिया हिल गई। हमारे पापा तो हमेशा हमारे साथ
रहने वाले थे।

उस दिन स्कूल चुपचाप खत्म हुआ। मेरे जन्मदिन की
खुशी मेरी दोस्त के आँसुओं में खो गई।

शाम को मैंने सब कुछ पापा को बताया।

“रो मत, अनु,” पापा ने समझाया, “उसे अपना प्यार और
हिम्मत देना।”

मैंने उनकी आँखों में एक अजीब-सी उदासी देखी। मेरा
मन हल्का करने के लिए उन्होंने फिर मेरे जन्मदिन और
तोहफे की बात छेड़ी।

“जो भी दोगे बाबा, मैं खुश रहूँगी।”

“फिर भी कुछ खास पसंद आएगा,” उन्होंने कहा।

“मेरे पास सब कुछ है,” मैंने कहा, “फिर भी अगर ज़िद
करूँ तो—सिगरेट छोड़ दीजिए।”

“फिर वही बात, अनु,” पापा बोले, “मुझे कुछ नहीं होगा।”

“लेकिन बाबा... तान्या के पापा,” कहते हुए मैंने अपना
चेहरा उनके सीने में छुपा लिया।

“वह गुड़िया का घर याद है?” पापा मुस्कराए।

“ठीक है,” मैंने कहा, अब और बहस नहीं कर सकती
थी।

तीन हफ्ते बीत गए और मेरा जन्मदिन आ गया। पूरे
दिन शुभकामनाएँ मिलती रहीं। शाम तक मैं सच में खुद
को राजकुमारी समझने लगी। केक कटा, तोहफे मिले,
दोस्त आए, और खूब मज़ा हुआ।

जाते समय तान्या ने मुझे गले लगाकर कहा,

“तुम बहुत खुशकिस्मत हो अनु, तुम्हारे पापा तुम्हें सच में
राजकुमारी की तरह रखते हैं।”

मेरे भीतर कहीं एक आवाज़ गूँजी—

क्या मैं सच में अपने पापा की राजकुमारी हूँ?

तोहफे खोलने का समय आया।

“सबसे पहले कौन-सा खोलोगी?” माँ ने पूछा।

“बाबा का गुड़िया घर,” मैंने कहा।

मैंने उत्साह से पैकिंग खोली। अंदर एक बड़ा डिब्बा था,
और उसके अंदर एक छोटा पैकेट। गुड़िया का घर नहीं
था। मैंने पैकेट खोला।

अंदर सिगरेट के पैकेट थे।

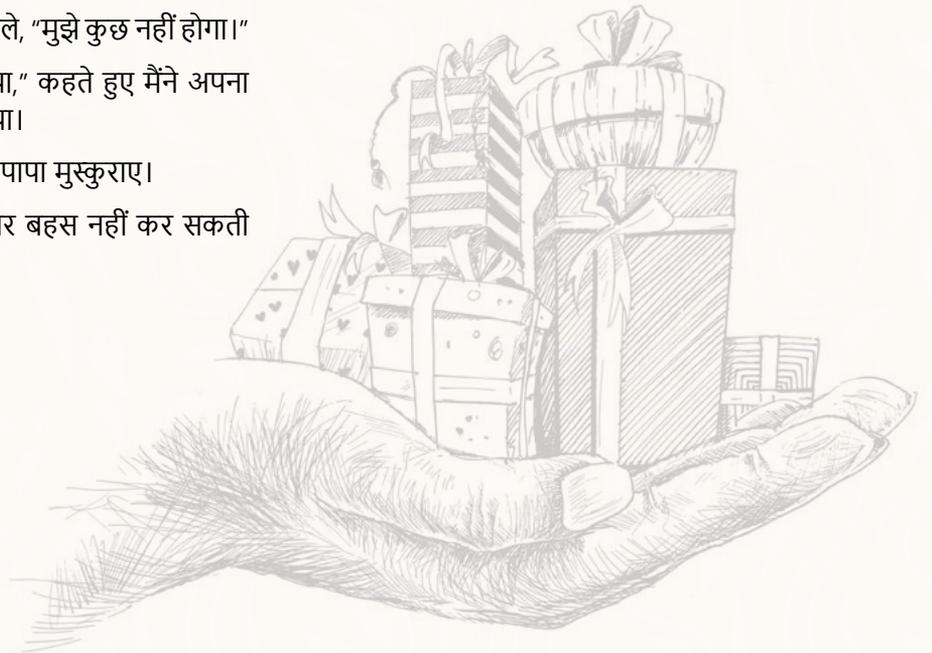
मैं हैरानी से पापा को देखने लगी।

“अनु,” पापा मुस्कराए, “आज से मैंने सिगरेट छोड़ दी।
इन्हें तुम खुद फेंक दो। यही तोहफा तुम चाहती थीं, है
ना?”

मैं दौड़कर पापा से लिपट गई। मुझे अपने पापा पर शक
करने के लिए शर्म आ रही थी।

उस दिन मुझे पूरा यकीन हो गया—

मैं सच में अपने पापा की राजकुमारी हूँ।





महेश पटनायक

प्राचीन भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी

प्राचीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को दैवीय तत्व माना जाता था, जो हमारे धार्मिक ग्रंथों में गहराई से समाहित थे। वेद, उपनिषद और पुराण जैसे ग्रंथ एक ऐसे विश्वदृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं जहाँ विज्ञान और दैवीयता सह-अस्तित्व में हैं, और ब्रह्मांड तथा उसके भौतिक नियमों को विरोध के बजाय दैवीय चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। ये ग्रंथ अक्सर आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि को अनुभवजन्य अवलोकनों के साथ जोड़ते हैं, जिससे ब्रह्मांड विज्ञान, परमाणु सिद्धांत और गणित में उन्नत अवधारणाओं का पता चलता है।

प्राचीन भारत में विज्ञान और आध्यात्मिकता का मेल अंतर्संबंध के सिद्धांत से उपजा, जिसके अनुसार दोनों ही क्षेत्र अंततः शांति की तलाश करते हैं और जीवन में सकारात्मकता लाने वाले नियमों का पालन करते हैं। भारत के प्राचीन ऋषि मूलतः महान वैज्ञानिक थे जिन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को धार्मिक दृष्टि से देखा। इस एकीकरण ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को फलने-फूलने का अवसर दिया, जिससे उच्च आध्यात्मिक साधनाओं को बढ़ावा मिला। धार्मिक यंत्रों और अन्य विभिन्न प्रथाओं के निर्माण में सटीक गणित और ज्यामिति का उपयोग किया गया।

महाभारत और रामायण जैसे धार्मिक ग्रंथों में वर्णित विभिन्न प्रकार के हथियार और वाहन उस युग के उन्नत विज्ञान और प्रौद्योगिकी को दर्शाते हैं। प्राचीन भारतीय परंपरा में महर्षि भारद्वाज को विज्ञान, अभियांत्रिकी और विमानन के क्षेत्र में अग्रणी ऋषि के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिन्होंने वैमानिक शास्त्र (यंत्र सर्वस्व का भाग) की रचना की थी। उनके कार्यों में विमान डिजाइन, पदार्थ विज्ञान, धातु विज्ञान और नौवहन सहित उड़ने वाली मशीनों (विमानों) से संबंधित उन्नत अवधारणाओं का विस्तृत वर्णन है, जिन्होंने शहरों, देशों और यहां तक कि ब्रह्मांड के बीच यात्रा को सुगम बनाया। प्राचीन विमानों के प्रमाण हमारे शास्त्रों और मंदिर की नक्काशी में मिलते हैं।

18वीं शताब्दी में जॉन डाल्टन ने रासायनिक प्रयोगों के माध्यम से जो प्रस्ताव रखा, वह लगभग 600 ईसा पूर्व

महर्षि कणाद द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों के समानांतर है। यद्यपि महर्षि कणाद के सिद्धांत दर्शन से जुड़े हुए हैं, जबकि डाल्टन के सिद्धांत रसायन विज्ञान पर आधारित हैं, फिर भी परिणाम आश्चर्यजनक रूप से समान हैं।

न्यूटन से बहुत पहले ही प्राचीन भारतीय विद्वान गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा से परिचित थे और इसे गुरुत्वाकर्षण कहते थे। इनमें से महत्वपूर्ण योगदान ब्रह्मगुप्त (7वीं शताब्दी) का है, जिन्होंने गुरुत्वाकर्षण को एक आकर्षण बल के रूप में वर्णित किया, और भास्कराचार्य (11वीं शताब्दी) का है, जिन्होंने "सिद्धांत शिरोमणि" में पृथ्वी के आकर्षण बल की व्याख्या की। इससे पहले के ग्रंथों में भी यह सुझाव दिया गया था कि सूर्य का आकर्षण ग्रहों को कक्षा में स्थिर रखता है।

पथानी सामंत (1835-1904) को ओडिया भाषा के सबसे प्रख्यात खगोलशास्त्री के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने पारंपरिक, स्वयं निर्मित बांस के उपकरणों का उपयोग करके खगोलीय दूरियों की गणना की। ओडिशा के खंडापाड़ा में जन्मे, उन्होंने मौलिक कृति "सिद्धांत दर्पण" की रचना की, जिसमें उन्नत खगोलीय माप दिए गए हैं जो आज भी ओडिया पंजिका तैयार करने में उपयोग किए जाते हैं।

5,000 वर्ष पूर्व उत्पन्न प्राचीन भारतीय गणित ने आधुनिक अंकगणित और बीजगणित की नींव रखी, जिसमें दशमलव प्रणाली और शून्य की अवधारणा शामिल है। आर्यभट और ब्रह्मगुप्त जैसे विद्वानों के महत्वपूर्ण योगदानों में ऋणात्मक संख्याओं का परिचय, उन्नत त्रिकोणमिति और पाई (π) की गणना शामिल हैं। इन नवाचारों ने न केवल खगोल विज्ञान और ज्यामिति में विकास किया, बल्कि वैश्विक गणित को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।

प्राचीन भारत में, वास्तु विद्या नामक भवन निर्माण तकनीक पंच महाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) के पांच मूलभूत तत्वों का सर्वोत्तम उपयोग करने वाली संरचनाओं के निर्माण की वकालत करती थी। इन तत्वों को ब्रह्मांड में सभी पदार्थ और ऊर्जा

का मूल घटक माना जाता है, जो अपने संतुलन के माध्यम से स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। एक साधारण इमारत भले ही आश्रय प्रदान करे, लेकिन वास्तु विद्या के अनुसार निर्मित संरचना का उद्देश्य शांति और समृद्धि को बढ़ावा देना है।

प्राचीन भारत कई उत्कृष्ट विचारकों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों और गणितज्ञों का घर था, जिनका योगदान समकालीन वैज्ञानिकों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। उनके विचार नवोन्मेषी और दूरगामी थे, जिन्होंने उन्हें

अपने समय से कहीं आगे स्थापित किया। इन प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा की गई प्रगति अक्सर उनके पश्चिमी समकक्षों से सदियों पहले की थी, जिसके कारण उन्हें अपनी खोजों के लिए अपार सम्मान और मान्यता प्राप्त हुई। अपनी असाधारण बुद्धि के बल पर, इन विचारकों ने समाज को लाभ पहुँचाया और प्राचीन भारत की महानता में योगदान दिया।





रोमा बनर्जी

जलवायु परिवर्तन और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विचारों की प्रासंगिकता



"वह वन मुझे लौटा दो, यह नगर ले लो,
ले लो सारा लोहा, ईट, लकड़ी और पत्थर।
हे नव-सभ्यता! हे निर्दयी, सब कुछ निगल जाने वाली!
वह तपोवन लौटा दो, उसकी पवित्र छाया सहित,
वे निष्कलुष, क्लांतिहीन दिन लौटा दो।
(चैताली, 1896 में प्रकाशित)"

इक्कीसवीं सदी का सबसे गंभीर संकट जलवायु परिवर्तन है, जिसने मानव सभ्यता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया है। ऐसे समय में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रकृति-केन्द्रित विचार असाधारण रूप से प्रासंगिक हो उठते हैं।

इस कविता में आज से लगभग 125 वर्ष पहले रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने पूरे मन से यह आग्रह किया था कि तथाकथित निर्जीव नगरों और महानगरों के बदले हमें उन वनों को वापस लौटा देना चाहिए, जो अपनी कोमल और शीतल छाया से जीवन को सुखद बनाते हैं। एक महान दूरदर्शी के रूप में टैगोर ने बहुत पहले ही यह भाँप लिया था कि जंगलों को नष्ट कर दिए गए अनियंत्रित और अव्यवस्थित शहरीकरण के परिणाम अत्यंत विनाशकारी होंगे।

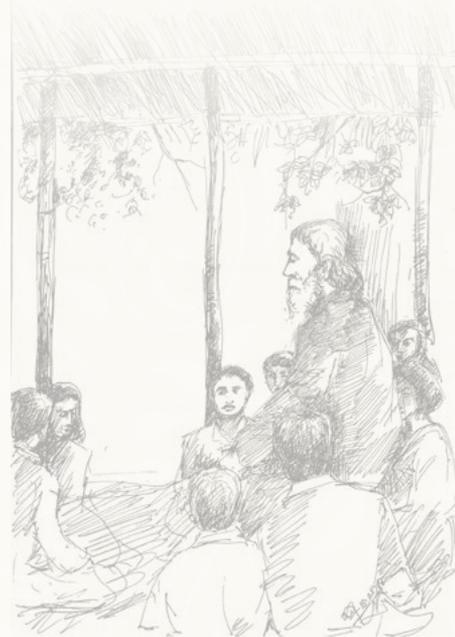
शहरीकरण को बढ़ावा देने में औद्योगीकरण की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता, लेकिन यह प्रक्रिया कुछ निश्चित नियमों और दिशा-निर्देशों के अनुसार होनी चाहिए, ताकि दीर्घकालिक स्थिरता बनी रहे और हमारी धरती की रक्षा हो सके। आज वर्षों की उपेक्षा और ज़िम्मेदार संस्थाओं की लापरवाही के कारण हम प्रकृति के प्रकोप को झेलने को मजबूर हैं। हिमालय क्षेत्र में अचानक आने वाली बाढ़ और व्यापक भूस्खलन से लेकर यूरोप और अमेरिका में भीषण दावानल तक, हाल के वर्षों में अनेक प्राकृतिक आपदाओं ने मानव सभ्यता को बार-बार झकझोर कर रख दिया है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2024 सबसे अधिक प्रभावित वर्ष रहा, जिसमें विश्व-भर में लगभग 13.5 मिलियन हेक्टेयर भूमि जंगल की आग में जल गई। इसका मुख्य कारण एल नीनो की परिस्थितियाँ और

मानव-जनित जलवायु परिवर्तन बताया गया है। यूरोपीय देश पिछले कुछ वर्षों से अत्यंत कठिन ग्रीष्मकाल का सामना कर रहे हैं, जहाँ तापमान 30 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला जा रहा है। भारत में भी राजधानी दिल्ली सहित प्रमुख शहरों की वायु गुणवत्ता अत्यंत खराब हो चुकी है, जिसका कारण बढ़ता वाहन प्रदूषण और मानवीय गतिविधियाँ हैं।

यदि हमने जंगलों और उपजाऊ चरागाहों को बचाए रखा होता और आधुनिक जीवन की तेज़ प्रगति तथा पर्यावरणीय संतुलन के बीच सामंजस्य बनाया होता, तो इन स्थितियों से काफ़ी हद तक बचा जा सकता था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 1928 में शांतिनिकेतन में 'वृक्षारोपण उत्सव' की शुरुआत की, क्योंकि वे पौधों को मनुष्य और प्रकृति के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी मानते थे। अपने असंख्य गीतों और कविताओं में उन्होंने छहों ऋतुओं में प्रकृति की वंदना और उपासना की है।

आज समय आ गया है कि हम टैगोर की दूरदर्शी बुद्धिमत्ता को याद करें और क्रोधित होती प्रकृति को शांत करने के लिए उनके विचारों का अनुसरण करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित रह सके।





सपना कुमारी

भारतीय युवाओं की आत्म-खोज



क्या आपको कभी लगता है कि आपकी बात सुनी नहीं जाती? क्या कभी ऐसा महसूस हुआ है कि आप बेकार हैं, या फिर किसी पिंजरे में बंद हैं—खासकर तब, जब आप युवा हैं और जीवन में बहुत कुछ अनुभव करना चाहते हैं? मुझे भी यही महसूस हुआ था जब मैं हाई स्कूल में थी। लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई, मुझे समझ आया कि यह भावना सिर्फ मेरी नहीं है। भारत के बहुत से युवाओं की यही स्थिति है।

भारतीय परिवार अक्सर आत्म-मूल्य को नुकसान पहुँचाती है—लगातार तुलना, शर्म पर आधारित अनुशासन और “लोग क्या कहेंगे” का डर। इन सबके कारण गलतियों को सीखने की बजाय चरित्र की कमी मान लिया जाता है। इस वजह से युवा यह सोचने लगते हैं कि “मैं तभी काबिल हूँ जब मैं सफल हूँ।” यहीं से डर, अपराधबोध और झिझक पैदा होती है।

भारत में बड़े होते हुए हम बहुत कुछ सीखते हैं—बड़ों का सम्मान करना, परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालना और परंपराओं को मानकर चलना। लेकिन हमें यह शायद ही सिखाया जाता है कि खुद पर भरोसा कैसे किया जाए। हम में से बहुतों के लिए आत्म-मूल्य शर्तों पर आधारित होता है। जब आप आज्ञा मानते हैं, तब आपको सम्मान मिलता है। जब आप सफल होते हैं, तब आपको प्यार मिलता है। और जब तक आपके पास कोई प्रमाण नहीं होता, तब तक आपसे उम्मीद की जाती है कि आप चुप रहें, सुरक्षित रहें और छोटे बने रहें।

मैंने देखा है कि इसका युवाओं पर गहरा असर पड़ता है। वे खुद को समझने से पहले दूसरों की उम्मीदें पूरी करना सीख लेते हैं। वे स्वीकृति के पीछे भागते हैं, क्योंकि उन्होंने स्वीकृति को ही प्रेम समझ लिया है।

भारत में अपनी पहचान बनाने के लिए अक्सर अनुमति का इंतज़ार किया जाता है। परिवार हमेशा बुरा नहीं चाहते—वे बस जोखिम से डरते हैं। लेकिन निर्भरता को अपरिपक्वता समझ लिया जाता है। जब तक आप काफ़ी नहीं कमा लेते या कुछ बड़ा हासिल नहीं कर लेते, आपके फैसलों को निर्णय नहीं, बल्कि प्रयोग माना जाता है। इस समाज में आपको तभी काबिल माना जाता है जब आप खुद को साबित कर देते हैं।

यहीं से नुकसान शुरू होता है—क्योंकि जब आपका मूल्य दूसरों की मंजूरी पर टिका हो, तो एक असफलता

भी पूरी तरह से तोड़ देती है। जो आत्म-सम्मान दूसरों की राय से हिल जाए, वह सच्चा आत्म-सम्मान नहीं होता। सच्चा आत्म-मूल्य तालियों से नहीं, खुद पर विश्वास से आता है।

मैंने यह सीखा है कि आज्ञादी हमेशा विद्रोह से नहीं आती। कभी-कभी यह चुपचाप आती है—भावनात्मक दूरी से। मैं अपने परिवार से प्यार कर सकती हूँ और फिर भी अलग सोच रख सकती हूँ। मैं उनकी राय का सम्मान कर सकती हूँ और फिर भी अपनी राह चुन सकती हूँ। काफ़ी समय तक सफलता की परिभाषा रिश्तेदारों, पड़ोसियों और समाज से उधार ली गई। लेकिन उधार ली हुई परिभाषा कभी सच्ची ज़िंदगी नहीं बना सकती।

मैं ऐसी ज़िंदगी बनाना चाहती हूँ जिससे मुझे भागना न पड़े—जो सिर्फ दूसरों को अच्छी न लगे, बल्कि मुझे भी सच्ची लगे। पहले मुझे लगता था कि आज्ञादी समाज देगा। अब मुझे पता है कि आज्ञादी मुझे खुद लेनी होगी—शांति से, धैर्य से और बिना माफ़ी माँगे। मेरा मूल्य मेरी उपलब्धियों के अंत में नहीं है। यह पहले से ही मेरे भीतर है—उस साहस में, जिससे मैं खुद को अपनी शर्तों पर पहचानती हूँ।

आज हम भारतीय युवाओं को एक नई क्रांति की ज़रूरत है—यह राजनीतिक नहीं, बल्कि भावनात्मक क्रांति है। हमें अस्तित्व के लिए अनुमति माँगना बंद करना होगा और यह मानना शुरू करना होगा कि हम पहले से ही काबिल हैं। क्योंकि आत्म-मूल्य ही स्वतंत्रता का सबसे साहसी रूप है।





सुनीता दुबे

सोलमेट: वह जो स्मृतियों में नहीं, अस्तित्व में बस जाता है



हर मनुष्य के जीवन में एक ऐसा नाम होता है, जिसे वह अब खुले स्वर में नहीं लेता। एक ऐसा चेहरा, जिसे वह भूल जाना चाहता है, पर भूल नहीं पाता। समय बीत जाता है, लोग बदल जाते हैं, जीवन आगे बढ़ जाता है, पर कुछ रिश्ते समय के साथ समाप्त नहीं होते। वे स्मृति से आगे बढ़कर हमारे स्वभाव का हिस्सा बन जाते हैं। शायद वही सोलमेट होता है।

सोलमेट कोई परीकथा का पात्र नहीं है। वह कोई आदर्श, निर्दोष या पूर्ण व्यक्ति भी नहीं होता। वह बस एक ऐसी आत्मा होती है, जिसकी उपस्थिति में हम पहली बार अपने असली स्वरूप से मिलते हैं। उसके सामने हमें मजबूत दिखने की आवश्यकता नहीं होती—न स्वयं को सिद्ध करने की, न स्वयं को छिपाने की। वहाँ हम जैसे हैं, वैसे स्वीकार किए जाते हैं, और यही स्वीकार्यता आत्मा को छू जाती है।

सोलमेट को पहचानने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। वहाँ कोई औपचारिक घोषणा नहीं होती, बस एक गहरी शांति होती है—जैसे वर्षों की थकान को विश्राम मिल गया हो। कभी-कभी वह रिश्ता नामहीन रहता है। न समाज उसे कोई उपाधि देता है, न वह संबंध किसी औपचारिक बंधन में बंधता है। फिर भी उसका प्रभाव इतना गहरा होता है कि वह व्यक्ति चला जाने के बाद भी हमारे भीतर जीवित रहता है।

यह स्वीकार करना कठिन है, पर सत्य यही है कि हर सोलमेट हमारे साथ जीवनभर नहीं रहता। कुछ आत्माएँ हमारे जीवन में स्थायी होने नहीं, हमें बदलने आती हैं। वे हमें हमारी कमजोरियों से परिचित कराती हैं, हमारी अधूरी इच्छाओं को उजागर करती हैं और हमारे भीतर छिपे भय व प्रेम—दोनों को सामने लाती हैं। और फिर एक दिन परिस्थितियाँ उन्हें हमसे दूर कर देती हैं। पर वे जाते हुए भी हमें अधूरा नहीं छोड़ते; वे हमें हमारी गहराई से परिचित करा जाते हैं।

आज प्रेम की परिभाषाएँ तेज़ी से बदल रही हैं। रिश्ते संदेशों से, आकर्षण से और सुविधा से बनते हैं, पर आत्मा की पहचान का धैर्य कम होता जा रहा है। आज की युवा पीढ़ी "सोलमेट" शब्द तो सुनती है, पर उसकी गहराई को महसूस करने का समय शायद नहीं निकाल पाती। उनके लिए संबंध कभी-कभी अकेलेपन से बचने का माध्यम बन जाते हैं, न कि आत्मिक पहचान का अवसर।

और केवल युवा ही नहीं—जो लोग कभी इस गहराई को समझते थे, वे भी समाज के डर, चमक-दमक की चाह या जीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं के आगे अपनी आत्मा की आवाज़ को अनसुना कर बैठे। कभी "लोग

क्या कहेंगे" के भय से, तो कभी स्थिरता और सुरक्षा की आवश्यकता से, हम वह हाथ छोड़ देते हैं जो वास्तव में हमारी आत्मा को थामे हुए था। समय बीतने के बाद जब सब कुछ व्यवस्थित हो जाता है, तब भी भीतर कहीं एक प्रश्न रह जाता है—क्या हमने अपने सत्य को जिया था?

सोलमेट का जाना केवल किसी व्यक्ति का जाना नहीं होता, वह हमारे जीवन के एक अध्याय का समाप्त होना होता है। जीवन चलता रहता है—नए लोग मिलते हैं, नई जिम्मेदारियाँ आती हैं—पर भीतर कहीं एक शांत कोना बना रहता है। कभी कोई गीत सुनकर आँखें नम हो जाती हैं, कभी किसी स्थान से गुजरते हुए स्मृतियाँ लौट आती हैं। वह दर्द समय के साथ कम तो होता है, पर समाप्त नहीं होता; वह एक कोमल स्मृति बन जाता है, जो हमें याद दिलाती है कि हमने कभी सच्चा प्रेम महसूस किया था।

अक्सर कहा जाता है कि सोलमेट हमें पूरा करता है, पर सच्चाई यह है कि वह हमें यह एहसास दिलाता है कि हम पहले से ही पूर्ण थे। वह केवल एक दर्पण था, जिसमें हमने स्वयं को स्पष्ट देखा। उसके बाद वह हमारे जीवन में रहे या न रहे, हम स्वयं से अनजान नहीं रहते।

और अंत में शायद सोलमेट का अर्थ यही है—वह व्यक्ति नहीं, वह अनुभव है जो हमें जीवनभर भीतर से पुकारता रहता है। हम आगे बढ़ जाते हैं, चेहरे बदल जाते हैं, मौसम बदल जाते हैं, पर आत्मा की स्मृति नहीं बदलती। कभी किसी शांत रात में, जब सब सो चुका होता है और मन अपने सबसे सच्चे रूप में होता है, तब हम स्वीकारते हैं कि कुछ रिश्ते निभाने के लिए नहीं, समझने के लिए आते हैं। कुछ प्रेम पाने के लिए नहीं, जागने के लिए आते हैं। और तब हम धीरे से महसूस करते हैं—सोलमेट वह नहीं था जो हमारे साथ रह गया, सोलमेट वह था जिसने हमें स्वयं से मिलवा दिया।





सुनील कुमार श्रीवास्तव

नारी का स्वरूप



हमारे समाज और देश में नारी का एक विशेष एवं अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह आज से नहीं, बल्कि अनादि काल से सत्य है कि नारी के बिना समाज और राष्ट्र की कल्पना अधूरी है। नारी ही समाज की आधारशिला है; उसके बिना मानव सभ्यता का अस्तित्व संभव नहीं। सुन्दरता का दूसरा नाम स्त्री है। जब कभी भी सुन्दरता की बात आती है, तो हमेशा उनका वर्णन किये बगैर रह नहीं सकते ठीक उसी प्रकार नारी की सुन्दरता को भी नहीं नकारा जा सकता।

नारी अनेक रूपों में हमारे जीवन में उपस्थित रहती है—माँ, बहन, बुआ, मौसी, चाची, भाभी, बेटा और पत्नी के रूप में। इन सभी रूपों में वह प्रेम, त्याग, करुणा और ममता की सजीव प्रतिमूर्ति है। वास्तव में, नारी के बिना न तो परिवार की कल्पना की जा सकती है और न ही समाज या देश की। जनसंख्या का अस्तित्व भी नारी पर ही आधारित है, और जनसंख्या के बिना राष्ट्र की रचना असंभव है।

नारी हमारे समाज के लिए शक्ति भी है और संवेदना भी। उसके स्वरूप को समझना मानो जीवन के मूल तत्वों को समझना है। जैसा कि कहा गया है—

नारी बीच साड़ी है, कि साड़ी बीच नारी।

नारी में ही साड़ी है, कि साड़ी में ही नारी॥

असंख्य अत्याचारों और कठिन परिस्थितियों को सहते हुए भी नारी अपने धैर्य और साहस को बनाए रखती है। जब वह विवाह के पश्चात अपने मायके को छोड़कर ससुराल जाती है, तब उसे नए परिवेश, नए संबंधों और नई जिम्मेदारियों के साथ जीवन की एक नई शुरुआत करनी होती है। उस समय उसकी बुद्धिमत्ता, सहनशीलता और साहस स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। वह लज्जा, मर्यादा और संस्कार रूपी आभूषणों के साथ प्रत्येक संबंध को पूरी निष्ठा से निभाती है।

हे जननी, तेरा क्या मैं बखान करूँ।

तू तो अपने आप में ही पूर्ण है।

फिर मैं क्यों न तेरा ही दीदार करूँ॥

यह हमारे समाज की विडंबना है कि अनादि काल से एक पूर्ण नारी की सहनशीलता की परीक्षा ली जाती रही है। श्री राम द्वारा सीता मैया की परीक्षा से लेकर आज तक, समाज और कभी-कभी परिवार भी किसी न किसी रूप में नारी की परीक्षा लेते रहते हैं। फिर भी नारी धैर्य और सहनशीलता की मूर्ति बनकर अपने कर्तव्यों और सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करती रहती है।

आज के आधुनिक युग में नारी शिक्षा, रोजगार, विज्ञान, राजनीति और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। वह न केवल अपने परिवार को सशक्त बना रही है, बल्कि देश के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। बिना लड़कियों की शिक्षा के किसी भी देश का मानव विकास का सूचकांक बेहतर नहीं हो सकता। महिला शिक्षा से ही विकसित विश्व का सपना साकार होगा, जिसमें विकास के साथ खुशहाली भी होगी।

आधुनिक युग में नारी ने अपनी महत्ता को पहचाना। उसने दासता के बन्धनों को तोड़ दिया और स्वतंत्र व्यक्तित्व को अपनाया। आधुनिक नारी ने स्वतंत्रता के साथ-साथ स्वावलंबन का भी पाठ पढ़ा। उसने शिक्षा, राजनीति, व्यवसाय आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का सुन्दर परिचय दिया है।

निस्संदेह, नारी सृष्टि का आधार है और उसका सम्मान ही समाज की सच्ची उन्नति का मार्ग है।





तपश्री रॉय

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उद्दय: निहितार्थ और अनुप्रयोग



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आरंभ 1950 के दशक में ही हो गया था, लेकिन इसकी महत्ता को 1970 के दशक में पहचान मिली। जापान ने सबसे पहले इस ओर पहल की और 1981 में फिफ्थ जनरेशन नामक योजना की शुरुआत की थी। इसमें सुपर-कंप्यूटर के विकास के लिये 10-वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी।

इसके बाद अन्य देशों ने भी इस ओर ध्यान दिया। ब्रिटेन ने इसके लिये 'एल्वी' नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया। इसके बाद 1983 में कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर लागू होने वाली उन्नत तकनीकों, सर्किट का विकास करने के लिये एक संघ 'माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कंप्यूटर टेक्नोलॉजी' की स्थापना की।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है, जिसने विभिन्न उद्योगों में क्रांति ला दी है और हमारे रहने और काम करने के तरीके को नवीन आकार दिया है। मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण में प्रगति के साथ, एआई अधिक बुद्धिमान और सक्षम होता जा रहा है, जिससे इसके निहितार्थ और अनुप्रयोगों के बारे में उत्साह और चिंताएं दोनों बढ़ रही हैं। इस लेख में, हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उदय पर चर्चा करेंगे, विभिन्न क्षेत्रों में इसके गहरे प्रभाव की खोज करेंगे और इसके द्वारा सामने आने वाले नैतिक विचारों पर चर्चा करेंगे।

एआई का सबसे महत्वपूर्ण निहितार्थ उद्योगों में दक्षता और उत्पादकता बढ़ाने की इसकी क्षमता है। एआई-संचालित स्वचालन दोहराए जाने वाले कार्यों को सुव्यवस्थित करता है, जिससे मनुष्य अधिक जटिल और रचनात्मक प्रयासों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। विनिर्माण से लेकर स्वास्थ्य सेवा तक, एआई ने प्रक्रियाओं में सुधार करने, त्रुटियों को कम करने और समग्र उत्पादकता को बढ़ावा देने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम की मदद से, एआई सिस्टम बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं, पैटर्न की पहचान कर सकते

हैं और इंसानों की तुलना में डेटा-संचालित निर्णय तेजी से ले सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बेहतर रोगी देखभाल, निदान और उपचार को सक्षम करके स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में क्रांति ला रही है। एआई एल्गोरिदम सटीक निदान और उपचार योजना बनाने में डॉक्टरों की सहायता के लिए रोगी रिकॉर्ड, प्रयोगशाला परिणाम और चिकित्सा छवियों जैसे चिकित्सा डेटा का विश्लेषण कर सकता है। व्यक्तिगत स्वास्थ्य देखभाल सलाह और सहायता प्रदान करने के लिए एआई-संचालित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट का भी उपयोग किया जा रहा है। इसके अलावा, एआई दवा की खोज और जीनोमिक्स अनुसंधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जिससे वैज्ञानिकों को संभावित दवा उम्मीदवारों की पहचान करने और जटिल बीमारियों में अंतर्दृष्टि उजागर करने में मदद मिल रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में व्यक्तिगत और अनुकूली शिक्षण अनुभव प्रदान करके शिक्षा में क्रांति लाने की क्षमता है। एआई एल्गोरिदम शैक्षिक सामग्री और सिफारिशों को तदनुसार तैयार करने के लिए छात्रों के सीखने के पैटर्न और प्राथमिकताओं का विश्लेषण कर सकता है। इंटेलिजेंट ट्यूशन सिस्टम बेहतर शिक्षण परिणामों को बढ़ावा देते हुए छात्रों को व्यक्तिगत प्रतिक्रिया और मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, एआई-संचालित आभासी वास्तविकता और संवर्धित वास्तविकता एप्लिकेशन व्यापक शैक्षिक अनुभव बना सकते हैं, जिससे जटिल अवधारणाएं अधिक मूर्त और आकर्षक बन जाती हैं।

यद्यपि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय कई अवसर प्रस्तुत करता है, यह महत्वपूर्ण नैतिक विचारों को भी जन्म देता है। डेटा गोपनीयता, एल्गोरिदम में पूर्वाग्रह और रोजगार पर प्रभाव जैसे मुद्दों को सक्रिय रूप से संबोधित करने की आवश्यकता है। पारदर्शी और जवाबदेह एआई सिस्टम विकसित किया जाना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे निष्पक्ष, निष्पक्ष हों और गोपनीयता अधिकारों का सम्मान करें। इसके अतिरिक्त, नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और उद्योग

जगत के नेताओं को एआई प्रौद्योगिकियों के विकास और तैनाती को नियंत्रित करने के लिए दिशानिर्देश और नियम स्थापित करने के लिए सहयोग करना चाहिए।

माना जाता है कि 2045 तक मशीनें स्वयं सीखने और स्वयं को सुधारने में सक्षम हो जाएंगी और इतनी तेज़ गति से सोचने, समझने और काम करने लगेंगी कि मानव विकास का पथ हमेशा के लिये बदल जाएगा।

देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें इसे लेकर प्रयोग किये जा सकते हैं। देश के विकास में इसकी संभावनाओं को देखते हुए उद्योग जगत ने सरकार को सुझाव दिया है कि वह उन क्षेत्रों की पहचान करे जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल लाभकारी हो सकता है।

सरकार भी चाहती है कि सुशासन के लिहाज़ से देश में जहाँ संभव हो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल किया जाए।

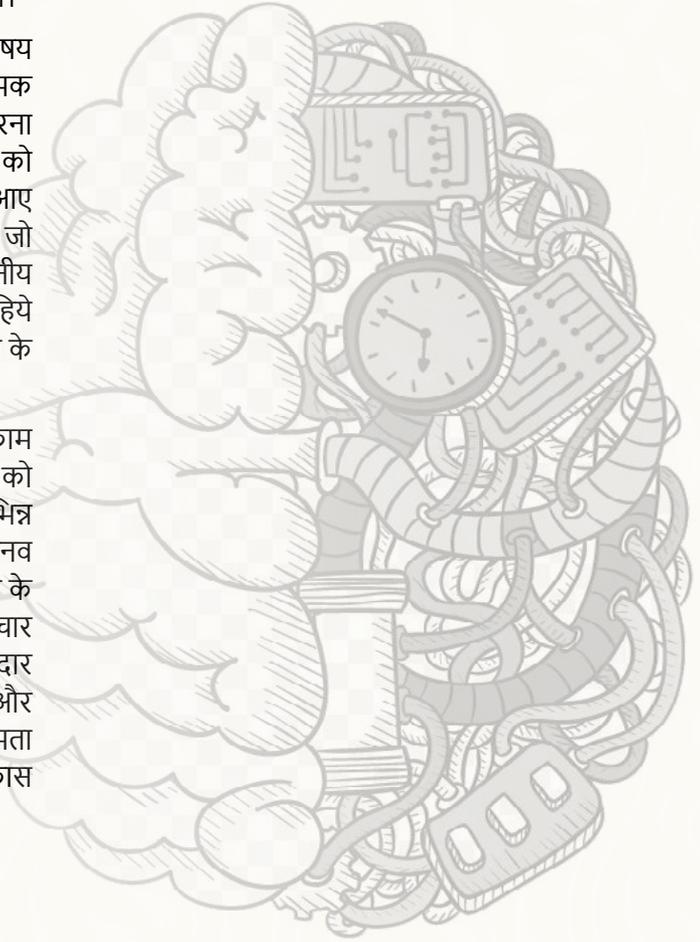
सफलता के लिये बहुत महत्वपूर्ण हो जाएगा। एक कुशल शिल्पकार, कलाकार, लेखक, संगीतकार, अध्यापक या डॉक्टर को बुद्धिमान मशीनों के युग में रोज़गार तो मिलेगा, पर बुद्धिमान मशीनों का व्यवसाय में दक्षता से प्रयोग उनके कौशल को और निखारेगा। सबसे ज़्यादा सफल तो वे होंगे जो एकदम नए उत्पाद, सेवाओं और उद्योगों की कल्पना करने में सक्षम होंगे।

दरअसल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक जटिल विषय है, अतः सबसे पहले इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभावों के संबंध में एक समग्र अध्ययन करना होगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर सरकार को सतर्क रहना होगा। मशीनीकरण के माध्यम से आए परिवर्तनों से सर्वाधिक प्रभावित वे समूह होते हैं जो अपनी कौशल क्षमता में निश्चित समय के भीतर वांछनीय सुधार लाने में असमर्थ होते हैं। अतः सरकार को चाहिये कि ऐसे लोगों को पर्याप्त प्रशिक्षण देने के लिये समय के साथ-साथ संसाधन भी उपलब्ध कराए।

निष्कर्ष: कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय हमारे रहने, काम करने और दुनिया के साथ बातचीत करने के तरीके को बदल रहा है। इसके निहितार्थ और अनुप्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए हैं, उद्योगों में क्रांति ला रहे हैं और मानव जीवन में सुधार ला रहे हैं। हालाँकि, एआई की प्रगति के लिए इसके नैतिक निहितार्थों पर सावधानीपूर्वक विचार करना आवश्यक है। एआई प्रौद्योगिकियों के जिम्मेदार विकास और तैनाती को बढ़ावा देकर, हम निष्पक्ष और समावेशी भविष्य सुनिश्चित करते हुए एआई की क्षमता का दोहन कर सकते हैं। जैसे-जैसे एआई का विकास

जारी है, समग्र रूप से समाज के लाभ के लिए इसके प्रक्षेप पथ को आकार देना हमारी जिम्मेदारी है।

ये विगत कई दशकों से चर्चा के केंद्र में रहा एक ज्वलंत विषय है। वैज्ञानिक इसके अच्छे और बुरे परिणामों को लेकर समय-समय पर विचार-विमर्श करते रहते हैं। आज दुनिया तकनीक के माध्यम से तेज़ी से बदल रही है। विकास को गति देने और लोगों को बेहतर सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिये प्रत्येक क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण और भूमंडलीकरण ने जहाँ विकास की गति को तेज़ किया है, वहीं इसने कई नई समस्याओं को भी जन्म दिया है, जिनका समाधान करने के लिये नित नए समाधान सामने आते रहते हैं। जहाँ वैज्ञानिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अनेकानेक लाभ गिनाते हैं, वहीं वे यह भी मानते हैं कि इसके आने से सबसे बड़ा नुकसान मनुष्यों को ही होगा, क्योंकि उनका काम मशीनों से लिया जाएगा, जो स्वयं ही निर्णय लेने लगेंगी और उन पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो वे मानव सभ्यता के लिये हानिकारक हो सकते हैं। ऐसे में इनके इस्तेमाल से पहले लाभ और हानि दोनों को संतुलित करने के आवश्यकता होगी।



पद्य संकलन





सर्दी का मौसम

अरिंदम रॉय

वो नवंबर का सुस्त-सा मौसम,
 वो दिसंबर की शरद रातें,
 आसमान पर चमकते चाँद-सितारे,
 पत्तों से टपकती ओस की बूंदें सारे।
 ठंडे हाथों में गर्म चाय का वो प्याला,
 गर्म कंबल का वो सुनहरा सहारा,
 खेतों में सरसों के वो लहलहाते हुए पेड़ का वो सहारा,
 बहती ठंडी हवाओं में गिरता हुआ वो पारा।
 ठंड से बंद होती वो नाक,
 वो दादी का सर्दी वाला काढ़े का स्वाद,
 सड़क के किसी किनारे पर वो जलती हुई आग,
 और उसको घेरे कुछ ठिठुरते हुए अनजाने हाथ।
 वो कोहरे से घिरी सड़कें,
 वो धुंध से भरी राहें,
 जीवन से भरी ये राहें,
 बुलाती हैं हमें फैला कर अपनी बाहें।



पितृत्व

मुथुसुब्रमण्यम एस एस

माथे पर पसीना, मन में दुआएँ,
 गलियारे में चहलकदमी, भय को पीछे छोड़ आएँ।
 नाजूक से धागे पर टिकी हैं दो ज़िंदगियाँ,
 कल के सपने मन में जगाती हैं उम्मीदें नई।
 माँ और शिशु की मौन चिंता में डूबा,
 इंतज़ार की घड़ियाँ लगे अनंत, असहज और सूबा।
 पहली किलकारी की आस, उँगलियाँ कसकर जुड़ी,
 असहाय होकर भी मज़बूत, रात है लंबी खड़ी।
 जब दोनों सुरक्षित हों, राहत धीरे से बहती है—
 मौन की गोद में ही पितृत्व की शुरुआत होती है।





अरुणाभ दास

जब बच्चें छोटे होते हैं ना, तो हम अक्सर थक जाते हैं।
रोज़ वही भागदौड़, वही ज़िम्मेदारियाँ।
मन में बारबार आता है - "कब ये बड़े होंगे?"
कब हमें थोड़ा सुकून मिलेगा!

बच्चे की तबीयत खराब हो जाए,
तो रातों की नींद उड़ जाती है।
स्कूल, टिफिन, पढ़ाई, दवाइयाँ -
पूरा दिन बच्चों के नाम होता है।

इन्हीं पलों में हम कई बार गलती कर बैठते हैं।
हम छोटी-छोटी बातों पर उन्हें डांट देते हैं,
बेफिजूल की बातों पर उनसे रूठ जाते हैं।
कभी सोचते भी नहीं कि ये पल कितने कीमती हैं।

लेकिन वक़्त बहुत तेज़ी से निकल जाता है।
और फिर...
एक दिन बच्चे बैग उठाकर
घर से बाहर चले जाते हैं।

कोई पढ़ाई के लिए, कोई नौकरी के लिए,
कोई अपनी ज़िंदगी बनाने के लिए।
पीछे रह जाता है एक सूनापन -
जो पूरे घर को खामोश कर देता है।

पीछे रह जाता है एक अजीब सा सन्नाटा
जो पूरे घर में गूँजता रहता है।
अब हर दिन एक वीडियो कॉल की आस।
बस एक बार उनको देख लूँ, बस एक बार उनकी
आवाज़ सुन लूँ!

तब समझ आता है -
जिन पलों को हम बोझ समझते थे,
वही पल हमारी
सबसे बड़ी दौलत थे।

तो अगर आज
आपके बच्चे आपके साथ हैं,
तो उन्हें आज ही जी लीजिए।
उनकी हँसी, उनकी शरारत, उनकी ज़िद - सब कुछ!

क्योंकि बच्चे बहुत जल्दी बड़े हो जाते हैं।
"कल" सिर्फ़ याद बनकर रह जाता है,
और "आज" कभी भी वापस नहीं आता।
इसलिए समय को यूँ ही निकलने मत दीजिए -
इसे जी भरकर जी लीजिए।।





माँ 

किशोर राय

माँ के बारे में मैं क्या लिखूँ,
माँ ने मुझे खुद लिखा है।
मेरे हर ख़्वाब के साये में
माँ का ही प्यार बसा है।
मौत के लिए इस संसार में
कई सारे रास्ते हैं मगर,
जन्म लेने के लिए एक
ही रास्ता है — माँ।
गिनती तक नहीं आती मेरी
माँ को, यारो,
मैं एक रोटी माँगता हूँ
और वो दो लाती हैं।
खुद भूखी रहकर भी
मेरा पेट भरती हैं,
मेरी एक मुस्कान के बदले
अपनी सारी थकान हरती हैं।

जन्म के हर लम्हों का
दीदार किया जब माँ ने,
गोद में उठाकर
मुझे प्यार किया।
सब कह रहे हैं आज
माँ का दिन है,
ऐसा कौन-सा दिन है
जो माँ के बिन है।
दवा असर न करे और
दुआ असर न करे,
तो वो नज़र उतारती हैं।
माँ है माँ, वो जनाब कहाँ
हार मानती हैं।
माँ मंदिर भी है, माँ मस्जिद भी है,
माँ दुआ भी है, मेरी हर साँस में
माँ की रज़ा भी है।





ब्रज कानाई मिश्रा

भारतीय सेना

सैनिक हैं देश का गौरव,
देश की आन बचते हैं।
नाम, नमक और निशान पर,
हँसकर प्राण लुटाने वाले।
अपनी जान की कुर्बानी देकर,
देश की शान बढ़ाते हैं।

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
सभी प्रांतों से आते हैं।
एक तिरंगे के नीचे एकत्र होकर,
शपथ कुर्बानी की खाते हैं।

सियाचिन की बर्फीली चोटियाँ हों,
या असम के घने जंगल।
अदम्य साहस से वीर हमारे,
कर देते हर पथ मंगल।

हो शीत या घोषित युद्ध,
शांतिकाल या आपातकाल।
तिब्र चोकस रहते सदा,
राष्ट्रप्रहरी बनकर।

भले ही चली जाए अपनी जान,
पर न झुके तिरंगे की शान।
सीना तान खड़े रहते हैं,
बनकर भारत की पहचान।

जब असफल हो जाएँ सभी तंत्र,
देश की रक्षा और सुरक्षा में।
तब अंतिम संकल्प बनकर,
सेना ही ज़िम्मेदारी उठाते हैं।

शत-शत नमन है भारत माँ को,
तुमको हम अपना शीश झुकाते हैं।
अखंड रहे भारत देश हमारा,
हम ऐसा विश्वास दिलाते हैं।
॥ जय हिन्द ॥ जय भारत ॥





सफ़र-ए-जिंदगी

चिरंजीब चटर्जी

जीवन की राहों में खुशियाँ कम,
और अरमान बहुत हैं।
जिसे भी देखो, हमेशा
परेशान बहुत हैं।
हर सुबह एक नई उम्मीद लाती है,
कभी इंसान हँसते हैं, कभी रोते हैं;
हर रात एक नया सपना दिखाती है,
पर जो साथ देते हैं,
सच्चे वही होते हैं।
कहते हैं, सच का कोई मुकाबला नहीं,
मगर आज तो झूठ की पहचान बहुत है;
फिर भी चलना है,
थककर धक्का खाना है,
ज़ख्मों से भरा रास्ता
फिर भी चुनना है।
बड़ी मुश्किल से मिलता है
शहर में आदमी,
यूँ तो कहने को
इंसान बहुत हैं।



दौड़

जया सिंह

जिंदगी की इस दौड़ में हम अपनों को भूल गए,
अपनों ने ही तो सिखाया था आगे बढ़ना और दौड़ना।
क्या उन्होंने सोचा था कि इस दौड़ में सब छूट जाएगा,
किसने जाना था कि इसी राह में सुकून खो जाएगा।
मक़सद तो था बस आगे निकल जाने का,
पर आदत हो गई लोगों को पीछे छोड़ जाने की।
क्या हम, क्या तुम, क्या अपने, क्या पराए—
सब भूल गए कि इस जीवन की दौड़ में आए।
इतना ही नहीं, रिश्ते भी धूल हो गए,
भागते-भागते अपने ही हमसे दूर हो गए।
किसने सोचा था इसी दौड़ में
हम उन्हीं से दूर निकल जाएँगे,
जिन्होंने हमें चलना सिखाया,
जिन्होंने गिरकर संभलना सिखाया।
दौड़ते-दौड़ते कब इतनी दूर आ गए,
पीछे मुड़ने का मौका भी खो गए।
अब होश में आकर क्या करें,
अपने तो इंतज़ार करते-करते खामोश हो गए।
ख्वाहिशों के पुल बनाते-बनाते
हम ख्वाबों को तौलना भूल गए।
अब पछताने या रोने से क्या होगा,
बस इतना ध्यान रहे—
जो पास है, उसे समेटना न भूल जाएँ।
क्योंकि दौड़ का मज़ा सबसे आगे निकल जाने में नहीं,
साथ-साथ चलकर हर पल जी लेने में है,
और जो कुछ मिले, उसे मिल-बाँट लेने में है।





एक फ़ौजी की खामोश श्रद्धांजलि

स्वाइन लीडर जुल्फ़कार हसन (सेवानिवृत्त)

हम मिले थे
वर्दी में।
नाम बाद में जाना,
भरोसा पहले।

वो आसमान का था।
मैं ज़मीन का।
पर क़सम
एक ही थी।

एयर शो था।
लोग देख रहे थे।
हम पहचान रहे थे।

फिर आसमान
एक पल को
रुक गया।
वो पल आया—
जिसे कोई रिहर्सल नहीं मिलती।
जहाज़ टूटा।
और एक फ़ौजी
वापस नहीं मुड़ा।

वो गिरा नहीं।
वो छोड़ा नहीं गया।
उसने बस
अपनी आखिरी ड्यूटी
पूरी कर दी।

लोग इसे दुर्घटना कहेंगे।
हम इसे
कर्तव्य की कीमत कहते हैं।

वो पति था।
हाँ।
वो दोस्त था।
बिल्कुल।
पर सबसे पहले
वो फ़ौजी था—
और फ़ौजी
खुद से पहले
देश को सोचता है।

उसकी पत्नी—
विंग कमांडर अफ़शान—
खड़ी रही।
आँखें भारी थीं,
पर रीढ़ सीधी।
क्योंकि कुछ आँसू
सलाम के बाद
इजाज़त माँगते हैं।

और एक छोटी बेटी है।
इतनी छोटी
कि सवाल बड़े लगते हैं।
वो पूछेगी—
“पापा कहाँ हैं?”

कोई जवाब नहीं देगा।
बस आसमान बोलेगा।
हर बार
जब जेट गुज़रेगा,
उसका सिर
अपने आप उठेगा।

क्योंकि कुछ पिता
गोद में नहीं रहते—
वो ऊँचाई बन जाते हैं।

जब तिरंगा आया,
कदम नहीं रुके।
साँस अटकी,
पर लाइन नहीं टूटी।
क्योंकि फ़ौजी
गिरकर भी
फॉर्मेशन बचाता है।

मैं रिटायर्ड हूँ।
पर ये दोस्त
आज भी ड्यूटी पर है—
ऊपर।
खामोशी में।
सीधे खड़ा।

लाइन कायम।
शहीद अमर।





यह दिल भी...

डॉली सेन

यह दिल भी कितनी अजीब चीज़ है।
 कभी वह उड़ जाता है गुब्बारे की तरह, हाथ से
 फिसलकर,
 तो कभी घर के अंधेरे कोने में चुपचाप गुम हो जाता है।
 कभी-कभी झरते हुए पत्तों के बीच वह मचलता रहता
 है तितली की तरह,
 तो कभी आँगन में टपकती हुई बारिश की बूंदों में
 अपने आँसू घोल देता है।
 यह दिल सचमुच एक अजीब-सी चीज़ है।
 परिदों के पंखों पर सवार होकर कभी वह छू लेता है
 आसमान,
 और चाँद की शबनम में नहाकर सूरज की किरणें
 ओढ़ लेता है।
 फिर वह भावनाओं के समंदर में डुबकी लगाता है,
 और एक छोटी बच्ची की तरह सो जाता है — उसे
 मत जगाना!
 कितना अजीब है न यह दिल?
 कभी दोस्तों से नाराज़गी, तो कभी दुश्मनों पर भरोसा।
 कभी गुस्से की आग में जलना, तो कभी प्यार का
 सुकून देना।
 यह दिल है न — बहुत खतरनाक है, इससे बचकर
 रहना।
 बेहतर होगा कि खुद को दिमाग के किले में सुरक्षित
 कर लो,
 अकेलेपन के तरकश में शक का तीर भर लो
 और नफ़रत का धनुष उठा लो,
 क्योंकि अगर दिल ने वार कर दिया,
 तो ज़िन्दगी भर हारते ही रह जाओगे, बार-बार।



उम्मीद

पियाली चक्रवर्ती

उम्मीद पर दुनिया है कायम,
 यह बदल देता है वायु से व्योम।
 जिस दिल के कोने में इसकी न हो निशां, वो किसी
 अंधकार में खो रही दिशा।
 आज से नहीं, सदियों से चली आ रही है, इसकी
 रोशनी,
 लौ जिसकी कभी न बुझे, और न छोड़ेगी निगरानी।
 उम्मीद कोई शोर नहीं, वो तो दिल की शांत आवाज़
 है,
 जो बताती है चीख कर, "हम पर भरोसा क्यों नहीं
 है?"
 हे पथिक! थोड़ा ठहरो, और निहारो, सुबह ज़रूर
 खिलेगी,
 बहारें फिर से आएंगी और जीवनी शक्ति हमारी
 प्रबल करेगी।
 नाव में बहते हुए पथिक को उभरना है, मिट्टी में दबी
 हुई बीज को फाड़कर निकलना है।
 इन्सान हार में भी जीत की कल्पना करता है,
 क्योंकि.....
 उसे अपने आप से भी ज्यादा इस छोटी सी 'उम्मीद'
 की आधार पर जो खरा उतरना है।





मैं नारी हूँ

प्रदीप्ता रॉय

चाहे बनालो मुझे अपने प्रतिशोध का शिकार,
चाहे करो मुझपर तेज़ाब से प्रहार!
प्रयत्न तुम्हारी मेरे मन को छूने की ना होगी कभी साकार।
क्योंकि- मैं सीता - हर अग्नि परीक्षा में विजयी अवश्य होंगी।
कभी रानी पद्मावती तो कभी लक्ष्मी के नाम से जानी जाऊंगी।।

चाहे करो भरी सभा में मेरा अपमान,
या करो मुझपर युद्ध का एलान !
कोशिश मुझे पराजित करने की कभी ना होगी साकार।
क्योंकि- मैं पांचाली - हर युग में इतिहास अवश्य रचूंगी।
कभी झाँसी की मर्दानी तो कभी मलाला के नाम से
पहचानी जाऊँगी।।

नारी से ही सृष्टि का सृजन, नारी से ही शिशु का परित्राण,
फिर भी भुगत रही हूँ युगों से तुम्हारे दुष्कर्मों का परिणाम।
कभी निर्भया तो कभी बानो बेगम के नाम से पुकारी जाती हूँ,
लाज को बेआबरू करते हो तुम और पहचान से वंचित मैं
रह जाती हूँ।

वरदक्षिणा के भार से डूबाई जाती रही कूप में अनंतकाल,
शिक्षा से वंचित रखा मुझे ताकि उन्नति से दूर रहू सहस्र साल।
मत भूलो समाज के ऐ वीर पुरुष !
नियति का फेर तो समस्त संसार को प्रत्यक्ष होगा,
सिर्फ बेटी हूँ इसलिए जलाते रहे जिसे ब्रून में बारांबर,
पुनर्जन्म तो तुम्हारा इसी दुर्गा की गोद में होगा।
पुनर्जन्म तो तुम्हारा इसी दुर्गा की गोद में होगा।।



खूबसूरत मेरा गाँव

बैद्यनाथ चक्रवर्ती

दुनिया की सबसे खूबसूरत जगह का नाम है—
मेरा घर, मेरा गाँव और मेरा शहर।
वह स्थान, जहाँ दीवारों पर यादों की महक बसती है,
और हर कोने में किस्सों का आसमान मुस्कुराता है।
जहाँ अपनों का सहारा प्यार में ढल जाता है,
और हर रिश्ता जीवन का गहरा अर्थ सिखाता है।
जहाँ दोस्ती की हर गली में अपनापन छाया रहता है,
और बचपन की शरारतों का स्वाद आज भी ठहरा रहता है।
जहाँ भूली-बिसरी यादों का पिटारा खुल जाता है,
और हर पुरानी बात में कोई नया अर्थ मिल जाता है।
वह मिट्टी, जो पाँव छूते ही मन तक उतर जाए,
वह हवा, जो हर साँस में अपनापन घोल जाए।
जहाँ हर राही अपने ही घर का मुसाफ़िर लगे,
और हर चेहरा जानी-पहचानी परछाईं बने।
जहाँ चौपालों की गुफ़्तगू आज भी जीवित है,
और अमराइयों की छाँव अब भी उतनी ही गहरी है।
जहाँ हर गली में बचपन की गूँज सुनाई देती है,
और हर शाम माँ की स्नेहिल पुकार अब भी बसी रहती है।
वही स्थान मेरी पहचान, मेरा अभिमान है—
सच कहूँ तो, वही मेरा गाँव, मेरी जान है।





विशाल लाल राउत

पतंगबाज़ी: बचपन की यादें

सर्दियों की हल्की धूप थी। जनवरी की एक सुबह।
छत पर जाने से पहले माँ ने आवाज़ लगा दी—
“संभलकर जाना, नीचे मत गिर जाना!”
हाथ में पतंग, जेब में थोड़ी-सी कटी हुई माँझा,
और दिल में बस एक ही सपना—
“आज सबकी पतंग काटनी है।”
छत पर पहुँचते ही जैसे एक अलग ही दुनिया मिलती थी।
हर ओर छतों का मेला लगता,
कहीं से आवाज़ आती—
“वो काट रहा है!”
“अरे बचाओ, बचाओ!”
“ले..... काट दिया!”
गली-मोहल्ले के बच्चे अपनी-अपनी छतों पर जमा हो
जाते।
किसी की पीली पतंग, किसी की लाल, तो किसी की
तिरंगी।
पतंग सिर्फ कागज़ नहीं होती थी—
वह इज़्ज़त, ताक़त और जीत की पहचान होती थी।
जब पतंग आसमान में उड़ती,
तो लगता जैसे हम भी उसके साथ उड़ रहे हों।
हवा तेज़ होती तो हाथ काँप जाते,
पर दिल कहता—
“डोर छोड़नी नहीं है!”
और फिर अचानक—
“वो देखो! वो काटने आ रहा है!”
माँझा खींचते, थोड़ा ढीला छोड़ते, फिर एक ज़ोर का
झटका—
और बस!
दूसरे की पतंग कटकर धीरे-धीरे नीचे गिर जाती।
नीचे से शोर मचता—
“भागो! पतंग आ रही है!”
सड़क पर बच्चे नंगे पाँव दौड़ते,
कोई दीवार फाँदता, कोई साइकिल छोड़ देता।

जो पतंग पकड़ लेता,
वही उस दिन का हीरो कहलाता।
शाम तक उँगलियों पर छोटे-छोटे ज़ख़म,
माँझे की जलन,
लेकिन चेहरे पर एक बड़ी-सी मुस्कान।
घर लौटते समय माँ डाँटती—
“फिर हाथ कटवा लिया?”
और हम हँसकर कहते—
“बस थोड़ा-सा।”
आज जब आसमान की ओर देखता हूँ,
तो पतंगें बहुत कम नज़र आती हैं।
मोबाइल आ गए हैं, खेल बदल गए हैं...
पर वो छतों की हँसी,
वो जीत का शोर,
और वो बचपन का खुला आसमान
कहीं पीछे छूट गया है।
मगर जब भी कहीं कोई पतंग उड़ती दिख जाती है,
दिल से बस यही आवाज़ आती है—
“काश, एक डोर और होती...
तो मैं फिर से बच्चा बन जाता।”

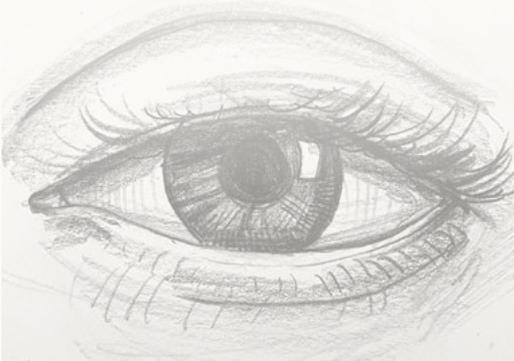




प्रत्याशा

सुदीप्त मजुमदार

तुमने कहा था—
चलो, थोड़ी देर रुकते हैं,
खामोशी की राहों पर
एक साथ
एक सपना बुनते हैं।
मुझे भी यक़ीन था—
कि एक रिश्ता होगा,
इस कायनात से परे,
जहाँ न कोई सवाल होगा,
न कोई उम्मीद होगा।
लेकिन वक़्त ने
अपना ही मतलब लिख दिया,
अचानक मुझे एहसास हुआ,
हर वादा धुंध में खो गया।
तुम आगे बढ़ चुकी थीं,
और मैं उसी धुंध में रह गया—
जहाँ सपनों का घर बन चुका था।
आज भी
मैं तुम्हें ढूँढ़ने की कोशिश करता हूँ, आज भी
बिछड़ा हुआ रास्ता तलाशता हूँ, आज भी
टूटे हुए सपने को जोड़ने की कोशिश करता हूँ।
थका हुआ हूँ, पर हारा नहीं—
प्रत्याशा अब मेरे लिए कठिन नहीं,
वह मुझे खुशी के बीते लम्हे याद दिलाती है,
और मेरे टूटते दिनों में हौसला भर देती है।



ईश्वर की महिमा

सुनील कुमार श्रीवास्तव

भाग्य का रोना छोड़ ऐ बंदे,
सब है तुम्हारे कर्मों का लेखा।
जैसा बीज बोया था जीवन में तूने,
वही तो अब तुम काटोगे।
ईश्वर तो हैं इतने कृपालु कि,
पल-भर में तेरे भाग्य बदल सकते हैं।
अभी से जप ले नाम तू उनका,
तेरे कर्म सुधर सकते हैं।
कर्म के सुधरते ही, तेरे भाग्य बदल जाएंगे।
ईश्वर तो हैं इतने कृपालु, हरदम साथ निभायेंगे॥
राम कह या रहीम, राधा कह या सीता,
वे तो केवल भाव हैं, देखते नहीं हैं कोई भेदा॥





सिक्का 

शेरोन क़मर

मुनाफे की धूप में
इंसान की छाया छोटी होती गई,
संख्याओं की दौड़ में
संवेदनाएं पीछे छूटती गईं।

जहां श्रम बिकता है सिक्कों में,
और सपने तोले जाते हैं भाव में,
वहां मेहनतकश की थाली में
रह जाता है आधा-सा छाँव।

ऊंची इमारतों की चमक में
झुगियों की रातें बुझ जाती हैं,
कुछ हाथों में दुनिया सिमटती है,
बाकी किस्मत समझौते निभाती है।

पूंजी कहती है— “आज़ाद हो तुम”,
पर जंजीरें दिखती नहीं हैं,
खरीद-फरोख्त की इस दुनिया में
इंसानी रिश्ते भी चीज़ें बनती हैं।

फिर भी उम्मीद की एक चिंगारी
हर दिल में सुलगती रहती है,
जब तक सवाल ज़िंदा हैं लोगों में,
तब तक बदलाव की राह बनी जाती है।



खुद में
रहो मस्त 

शुभ्रा धर

डिजिटल इस दुनिया में ज्ञान बहुत सस्ता है
सबके हरेक मामले में हमें कुछ न कुछ तो बोलना है
राजनीति हो या खेल कूद, स्वास्थ्य हो या साहित्य
हमें ज़रूर मालूम है, किससे होता है क्या।

थोड़ा थम कर अगर किया जाए थोड़ा सा गौर,
देखा जाएगा मौनता का भी लंबा होता है दौर...
खामोशी की आवाज़ें गूंजती हैं हवा में,
कहा जाता है बहुत कुछ बिन कुछ बोले।

ताकत की निशानी है खुद से जुड़े रहना
खुद में तल्लीन होकर खुद को समझ पाना।
आत्मसम्मान अक्सर मौनता से बरकरार रहता है,
एक कदम पीछे हटने से सुकून ढेर सारा मिल सकता है।

बढ़ती उम्र के साथ जरूरी है खुद को समेट लेना,
खुद को प्यार देकर खुद से दोस्ती बढ़ाना।
तलाश कर तो देखो तुम्हारे अंदर खूबियां क्या हैं!
तुमसे बढ़कर तुम्हें और कौन पहचानता है?





श्रीपर्णा दास

समाज के ठेकेदार

ये जो खुद को समाज का ठेकेदार कहते हैं,
हकीकत में ये नफ़रत का व्यापार करते हैं।
मर्यादा की चादर उढ़कर मंचों पर,
अन्दर ही अन्दर ये रिश्तों को तार-तार करते हैं।
इनकी नज़रें हमेशा दूसरों के घर पर टिकी रहती हैं,
मगर अपनी घरो की चारदीवारी की दरारें नजार ही नहीं
आती।

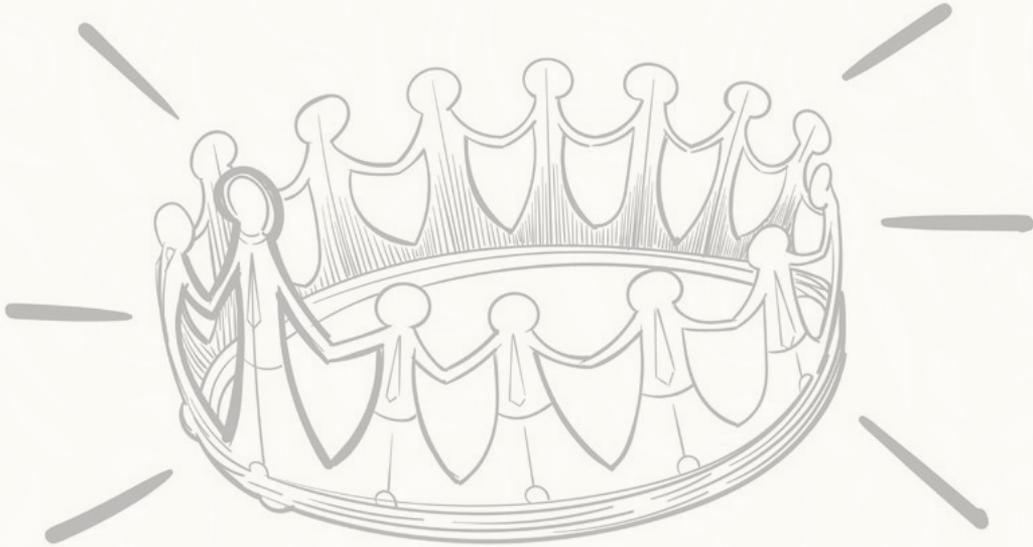
किसे क्या पहनना है, किससे क्या कहना है,
इनके हुक्म के बिना यहाँ कोई बात नहीं बिकती।

आज़ादी के हर अंकुर को ये कुचलना चाहते हैं,
पुराने सड़े नियम को ये दोबारा से पालना चाहते हैं।
बेटियों की हँसी में इन्हें षड्यंत्र नज़र आती है,
पर बेटों की हर गलती इन्हें अदब ही भाती है।

ये ठेकेदार जो खुद को धर्म का रक्षक बताते हैं,
असलियत में इंसानियत भूलकर, ये नफ़रत की दीवारें
सजाते हैं।

परिवर्तन की हवाओं से इन्हें बहुत डर लगता है,
क्योंकि सच जाग जाए, तो इनका सिंहासन जो डगमगाता है।
इसीलिए तो ये खुद को समाज के ठेकेदार कहते हैं।

ऐ दुनिया वालों, इन ठेकेदारों से अब ना डरना तुम,
अपनी सोच के पिंजरे को खुद ही तोड़ना तुम।
समाज हमसे बनता है, इन चंद चेहरों से नहीं,
खुद के विवेक को ही अपनी मशाल बनाना तुम।



राजभाषा पखवाड़ा 2025 के प्रतियोगिताओं के परिणाम:

कविता पाठ प्रतियोगिता

क्र.सं.	हिंदीभाषी प्रतिभागी	हिंदीतरभाषी प्रतिभागी
प्रथम	श्रीमती जया सिंह, सहायक प्रबंधक	श्रीमती सुचंदा बोस, सहायक प्रबंधक (शैक्षिक)
द्वितीय	श्रीमती प्रदीप्ता रॉय (निदेशक के सचिव)	श्रीमती डॉली सेन, प्रशासनिक कार्यकारी
तृतीय	श्रीमती श्वेता अग्रवाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	श्री एस. एन. घोष, सुरक्षा अधिकारी

अधूरी कहानी लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	हिंदीभाषी प्रतिभागी	हिंदीतरभाषी प्रतिभागी
प्रथम	श्रीमती स्वरूपा गुप्ता, टेलीफोन ऑपरेटर	श्रीमती संघमित्रा रॉय चौधरी, वरिष्ठ कार्यक्रम कार्यकारी
द्वितीय	श्री विशाल पाठक, पुस्तकालय सहायक	सुश्री पूजा साहा, मानव संसाधन कार्यकारी
तृतीय	श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव, कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक	श्री महेश पटनायक, कार्यपालक अभियंता (कार्यकारी)

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	हिंदीभाषी प्रतिभागी	हिंदीतरभाषी प्रतिभागी
प्रथम	श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव, कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक	सुश्री प्रियंका चटर्जी, कार्यक्रम कार्यकारी
द्वितीय	श्रीमती प्रदीप्ता रॉय (निदेशक के सचिव)	श्री चिरंजीव चटर्जी, उप सहायक अभियंता
तृतीय	श्री उदय शंकर, प्रशासनिक कार्यकारी	श्री महेश पटनायक, कार्यपालक अभियंता (कार्यकारी)

निमंत्रण पत्र बनाने की प्रतियोगिता

क्र.सं.	हिंदीभाषी प्रतिभागी	हिंदीतरभाषी प्रतिभागी
प्रथम	सुश्री सपना कुमारी, प्रशासनिक कार्यकारी	सुश्री पूजा साहा, मानव संसाधन कार्यकारी
द्वितीय	श्री विशाल लाल राउत, कार्यक्रम कार्यकारी	श्रीमती पायल मजुमदार, कार्यक्रम कार्यकारी
तृतीय	श्रीमती प्रदीप्ता रॉय (निदेशक के सचिव)	श्री चिरंजीव चटर्जी, उप सहायक अभियंता

वाद-विवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	हिंदीभाषी प्रतिभागी	हिंदीतरभाषी प्रतिभागी
प्रथम	श्री विशाल पाठक, पुस्तकालय सहायक	सुश्री पूजा साहा, मानव संसाधन कार्यकारी
द्वितीय	श्रीमती प्रदीप्ता रॉय (निदेशक के सचिव)	श्रीमती पायल मजुमदार, कार्यक्रम कार्यकारी
तृतीय	सुश्री सपना कुमारी, प्रशासनिक कार्यकारी	सुश्री प्रियंका चटर्जी, कार्यक्रम कार्यकारी

आशुभाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम/पदनाम
प्रथम	श्रीमती जया सिंह, सहायक प्रबंधक
द्वितीय	श्रीमती संघमित्रा रॉय चौधरी, वरिष्ठ कार्यक्रम कार्यकारी
तृतीय	श्रीमती डॉली सेन, प्रशासनिक कार्यकारी श्री चिरंजीव चटर्जी, उप सहायक अभियंता

प्रोत्साहन पुरस्कार

श्री मोहन चरण जेना, कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक
श्रीमती श्रीपर्णा दास, लेखा कार्यकारी
श्रीमती तपश्री रॉय, सहायक प्रबंधक
श्री ब्रज कानाई मिश्रा, मानव संसाधन कार्यकारी
श्री बैद्यनाथ चक्रवर्ती, वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक

राजभाषा प्रतियोगिता: वर्ष 2025-26 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम

दिनांक 19/12/2025 को राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता के परिणाम:

प्रथम पुरस्कार: श्रीमती प्रदीप्ता रॉय (निदेशक के सचिव)
द्वितीय पुरस्कार: श्री सौहाद्र बल्हा (62 बैच) पंजीकरण संख्या: एम.बी.ए./0296/62
तृतीय पुरस्कार: श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव (कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक)

प्रोत्साहन पुरस्कार

1. श्री उदय शंकर (प्रशासनिक कार्यकारी)
2. श्रीमती सुचंद्रा बोस, सहायक प्रबंधक (शैक्षिक)
3. श्री बैद्यनाथ चक्रवर्ती (वरिष्ठ प्रशासनिक कार्यकारी)
4. श्रीमती बिदिशा चक्रवर्ती, वरिष्ठ प्रबंधक (लेखा)
5. श्रीमती पुबाली दे, सामान्य सहायक (लेखा)

दिनांक 27/02/2026 को राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित हिन्दी में अभिनय प्रतियोगिता के परिणाम:

प्रथम पुरस्कार: श्रीमती जया सिंह, सहायक प्रबंधक
द्वितीय पुरस्कार: सुश्री पूजा साहा, मानव संसाधन कार्यकारी
तृतीय पुरस्कार: श्रीमती श्रीपर्णा दास, लेखा कार्यकारी

प्रोत्साहन पुरस्कार

1. श्री विशाल पाठक, पुस्तकालय सहायक
2. श्रीमती पिंकी नायर, कार्यक्रम कार्यकारी
3. श्रीमती डॉली सेन, प्रशासनिक कार्यकारी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कोलकाता (कार्यालय-2) के तत्वावधान में वर्ष 2025-26 के आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के परिणाम

वाक कौशल/ वाद-विवाद प्रतियोगिता

- » श्रीमती जया सिंह, सहायक प्रबंधक: प्रोत्साहन-I पुरस्कार (हिंदीभाषी प्रतिभागी)
- » श्रीमती संघमित्रा रॉय चौधरी, वरिष्ठ कार्यक्रम कार्यकारी: प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)
- » श्री बैद्यनाथ चक्रवर्ती, वरिष्ठ प्रशासनिक कार्यपालक: प्रोत्साहन-II पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)

आशुभाषण प्रतियोगिता

- » श्री विशाल पाठक, पुस्तकालय सहायक: प्रोत्साहन-I पुरस्कार (हिंदीभाषी प्रतिभागी)
- » श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव, कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक: प्रोत्साहन-II पुरस्कार (हिंदीभाषी प्रतिभागी)
- » श्रीमती संघमित्रा रॉय चौधरी, वरिष्ठ कार्यक्रम कार्यकारी: प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)
- » श्री बैद्यनाथ चक्रवर्ती, वरिष्ठ प्रशासनिक कार्यपालक: प्रोत्साहन-I पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)

चित्र देखकर कहानी लिखना प्रतियोगिता

- » श्रीमती स्वरूपा गुप्ता घांटी, टेलीफोन ऑपरेटर: प्रोत्साहन-II पुरस्कार (हिंदीभाषी प्रतिभागी)
- » सुश्री पूजा साहा, कार्यकारी (मानव संसाधन): प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)
- » श्रीमती प्रदीप्ता रॉय, निदेशक के सचिव: प्रोत्साहन-II पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)

काव्य-पाठ प्रतियोगिता

- » श्रीमती जया सिंह, सहायक प्रबंधक: प्रोत्साहन-I पुरस्कार (हिंदीभाषी प्रतिभागी)
- » श्रीमती प्रदीप्ता रॉय, निदेशक के सचिव: प्रोत्साहन-II पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)

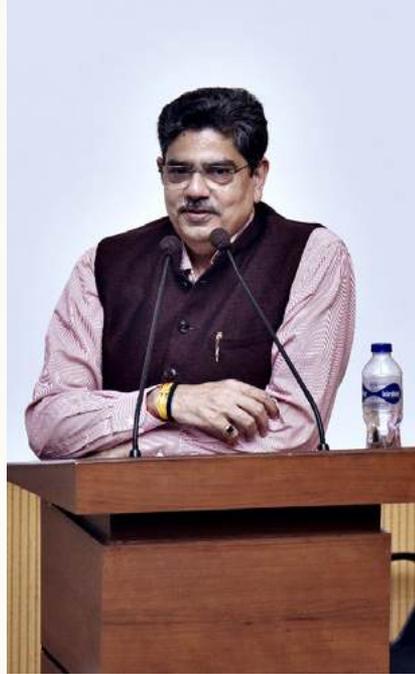
प्रश्नोत्तरी (क्विज) प्रतियोगिता

- » श्री महेश पटनायक, कार्यपालक अभियंता (कार्यकारी): प्रोत्साहन-II पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)

हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता

- » सुश्री पूजा साहा, कार्यकारी (मानव संसाधन): प्रथम पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)
- » सुश्री रोहिणी चटर्जी, कार्यक्रम कार्यकारी: प्रोत्साहन-II पुरस्कार (हिंदीतर भाषी प्रतिभागी)

दिनांक 11 सितंबर, 2025 से 26 सितंबर, 2025 तक के दौरान राजभाषा पखवाड़ा 2025 का आयोजन किया गया था एवं समापन समारोह दिनांक 26 सितंबर, 2025 को राजभाषा गृह पत्रिका “सृजन” के तृतीय अंक का लोकार्पण किया गया था ।





दिनांक 31 अक्टूबर, 2025 को राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया।



दिनांक 14/11/2024 को स्वामी सर्वप्रियानंदजी महाराज, प्रमुख, न्यू यॉर्क वेदांत सोसाइटी के उपस्थिती में संस्थान का स्थापना दिवस मनाया गया।



दिनांक 21/11/2025 को राजभाषा कार्यशला का आयोजन किया गया ।



दिनांक 29/11/2025 को डॉ. एस. जयशंकर, विदेश मंत्री, भारत सरकार को मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई।



दिनांक 19/12/2025 को 'कविता पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया ।



दिनांक 09 जनवरी, 2026 को नराकास (कार्यालय-2) के तत्वावधान में चित्र देखकर कहानी लिखने की प्रतियोगिता आयोजित की गई ।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह



अधिकारियों हेतु पिकनिक का आयोजन किया गया।



स्वच्छता पखवाड़ा सप्ताह



दिनांक 21 जनवरी, 2026 को वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।



गणतंत्र दिवस



दिनांक 26/02/2026 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया ।



दिनांक 27/02/2026 को 'हिन्दी में अभिनय प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया ।





भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता - 700104

दूरभाष +91 33 7121 1000